अफ़नासी निकीतिन की

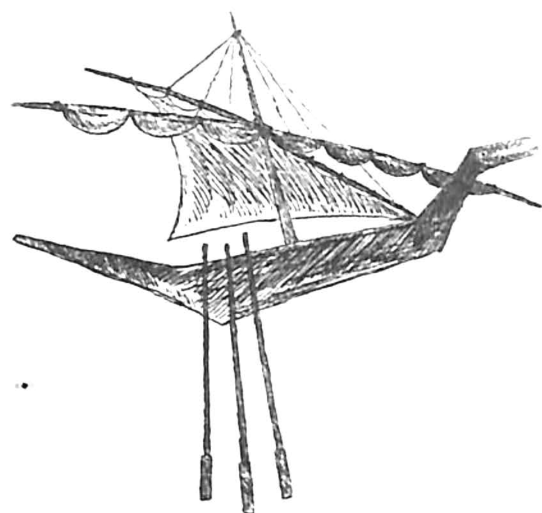
तीन समुद्र पार यात्रा











अफ़नासी

तीन समुद्र पार यात्रा

१४६६-१४७२

निकीतिन की



૧૯૬૬

૧૯૭૨



तीन समुद्र



अफ़नासी निकीतिन की

पार यात्रा



रादुगा प्रकाशन
मास्को



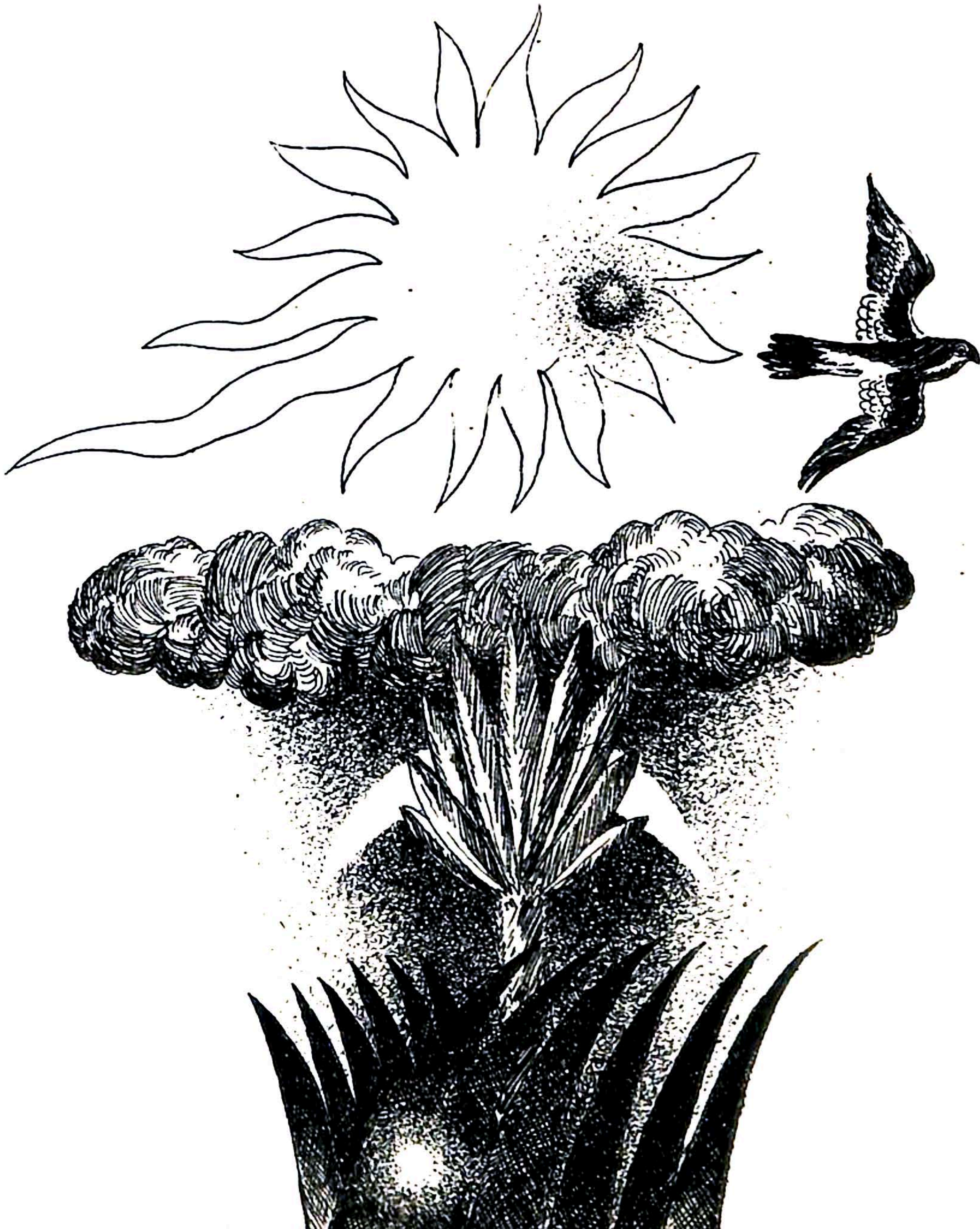
पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५



पवित्र पिताओं की प्रार्थनाओं के द्वारा ईश्वर के पुत्र, हे प्रभु ईसा मसीह, मुझ निकीतिन के पुत्र, तेरे पापी सेवक अफ़नासी पर दया करो।

मैंने तीन समुद्र पार की अपनी पापमय यात्रा का विवरण लिखा है: पहला, देर्बेंत या ख़्वालिन सागर[1] ; दूसरा, हिन्द सागर या हिन्दुस्तान सागर[2] और तीसरा काला सागर या स्तांबुल सागर[3]। मैं स्वर्ण-गुम्बददार उद्धारक गिरजे[4] की दया से, ग्रैंड ड्यूक मिख़ाईल बोरीसोविच[5] और महामहिम गेन्नादी[6] तथा बोरीस ज़हारिच से आशीर्वाद प्राप्त करके वोल्गा से नीचे की ओर रवाना हुआ।

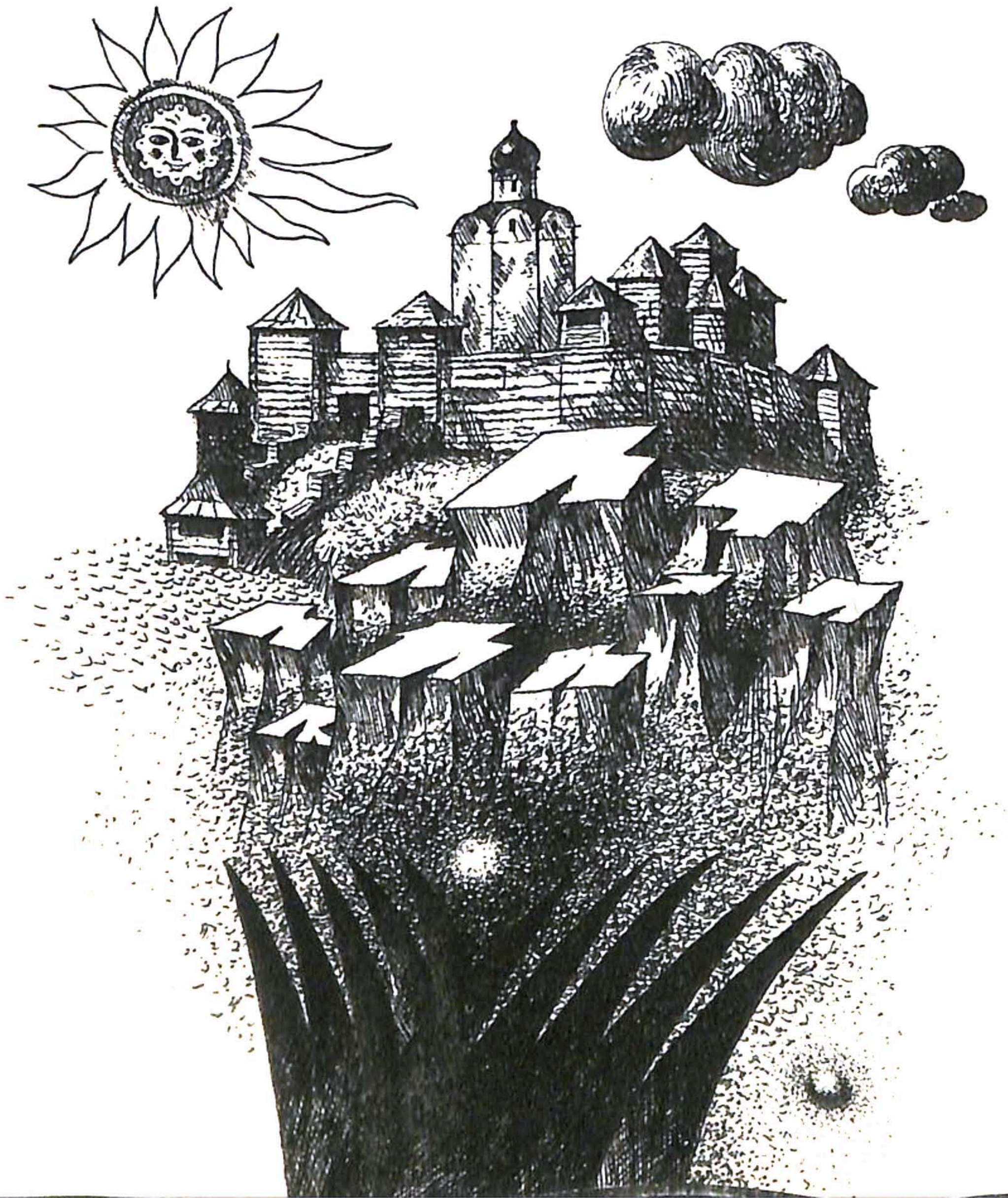
काल्याज़िन पहुंचने पर मैंने पवित्र ट्रिनिटी मठ[7] तथा पवित्र शहीदों बोरीस और ग्लेब[8] के सर्वोच्च पादरी मकारियस और उनके बंधुओं का आशीर्वाद प्राप्त किया। काल्याज़िन से मैं उगलिच गया और उगलिच से त्वेर के ग्रैंड ड्यूक[9] के एक दूसरे पारपत्र के साथ कोस्त्रोमा के राजा अलेक्सांद्र के यहां गया और उन्होंने



मुझे बेरोकटोक आगे बढ़ जाने दिया। न ही मुझे निज्नी नोवगोरोद नगर के रास्ते में गवर्नर मिख़ाईल किसेलेव और चुंगी-रक्षक इवान सारायेव के पास जाने से किसी ने रोका।

वसीली पापिन[10] आगे बढ़ चुका था और मुझे नोवगोरोद में तातार शिर्वानशाह के राजदूत हसन बेग के पहुंचने की और दो हफ़्ते प्रतीक्षा करनी पड़ी। वह ग्रैंड ड्यूक इवान के यहां से बाज़ों के साथ आ रहा था, जो उसके पास ९० थे। और मैं उसके साथ निचली वोल्गा की ओर बढ़ चला। हमारा जलपोत काज़ान, होर्दा, उस्लान, सराई[11] और बेरेकेज़ान[12] से बिना किसी रुकावट के आगे बढ़ता गया।

और अब हमने बुज़ान नदी[13] में प्रवेश किया। वहां हमें तीन काफ़िर तातार मिले, जिन्होंने हमें यह झूठी ख़बर दी कि ख़ान कासिम[14] तीन हज़ार तातारों के



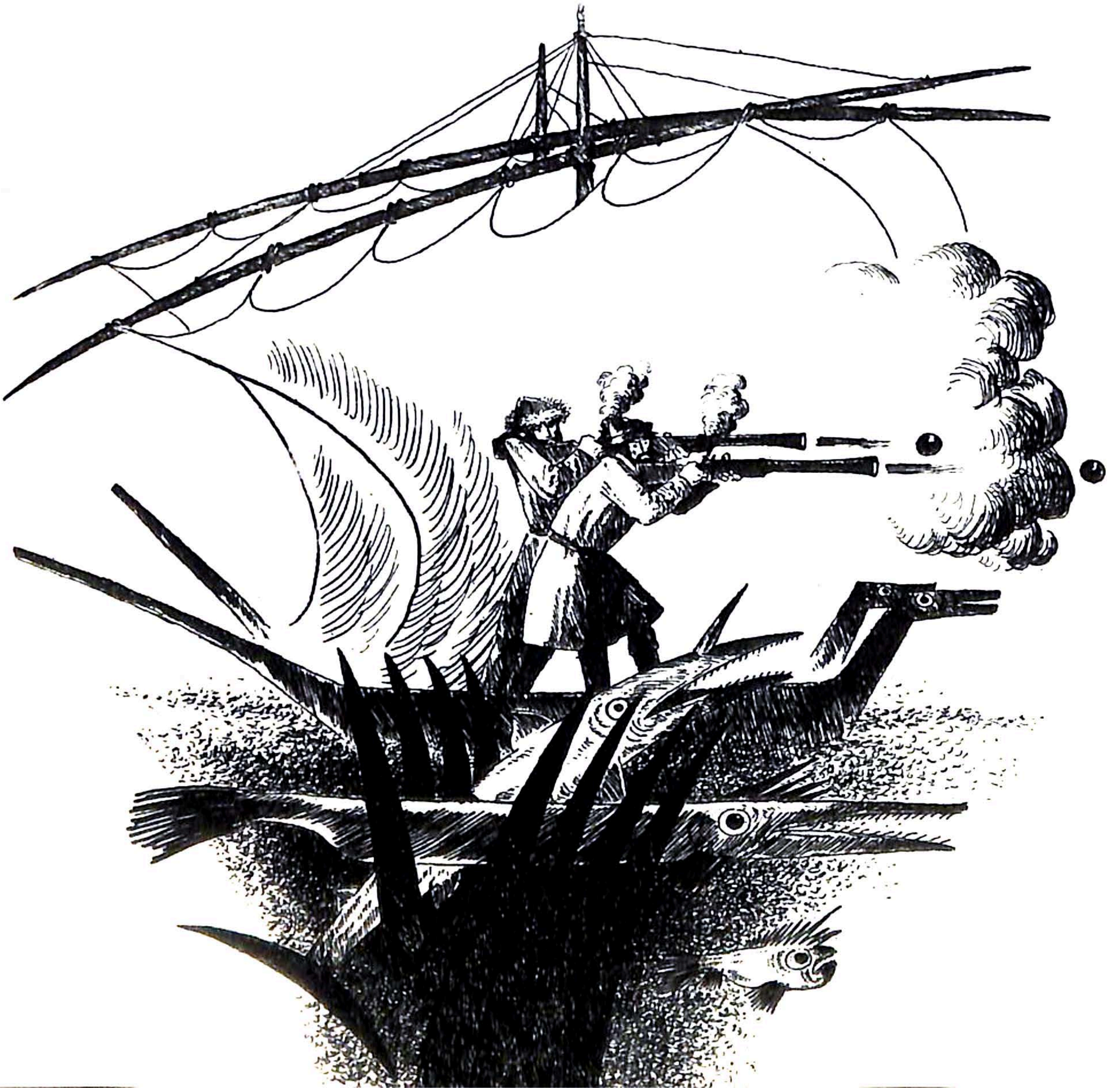
साथ बुज़ान नदी में व्यापारियों की घात में बैठा है। शिर्वानशाह के राजदूत हसन बेग ने उन तातारों को एक-एक कोट और लिनेन का एक-एक टुकड़ा दिया, ताकि वे हमें आस्त्राख़ान से सुरक्षित ढंग से निकाल दें। तातारों ने कोट ले लिये लेकिन आस्त्राख़ान के राजा को हमारे बारे में सूचना भेज दी। मैंने अपना जलपोत छोड़ दिया और अपने साथियों के साथ राजदूत के जलपोत पर आ गया। जब हम आस्त्राख़ान से गुज़र रहे थे, तो आकाश में चंद्रमा चमक रहा था। राजा ने हमें देख लिया और तातारों ने हमें चिल्लाकर कहा: "रुक जाओ!" लेकिन हमने उनके इस आदेश पर कोई ध्यान नहीं दिया और आगे बढ़ते गये। तब राजा ने अपने संपूर्ण गिरोह को हमारा पीछा करने के लिए भेजा और हमारे गुनाहों के लिए हमें बुगुन[15] पर घेर लिया गया। तातारों ने हमारे एक आदमी और हमने उनके दो आदमियों को मार डाला। उन्होंने हमारे छोटे जलपोत को एक बांध के किनारे रोककर पकड़



लिया और तुरंत सब कुछ लूट लिया। मेरा सभी सामान उसी छोटे जलपोत में था।

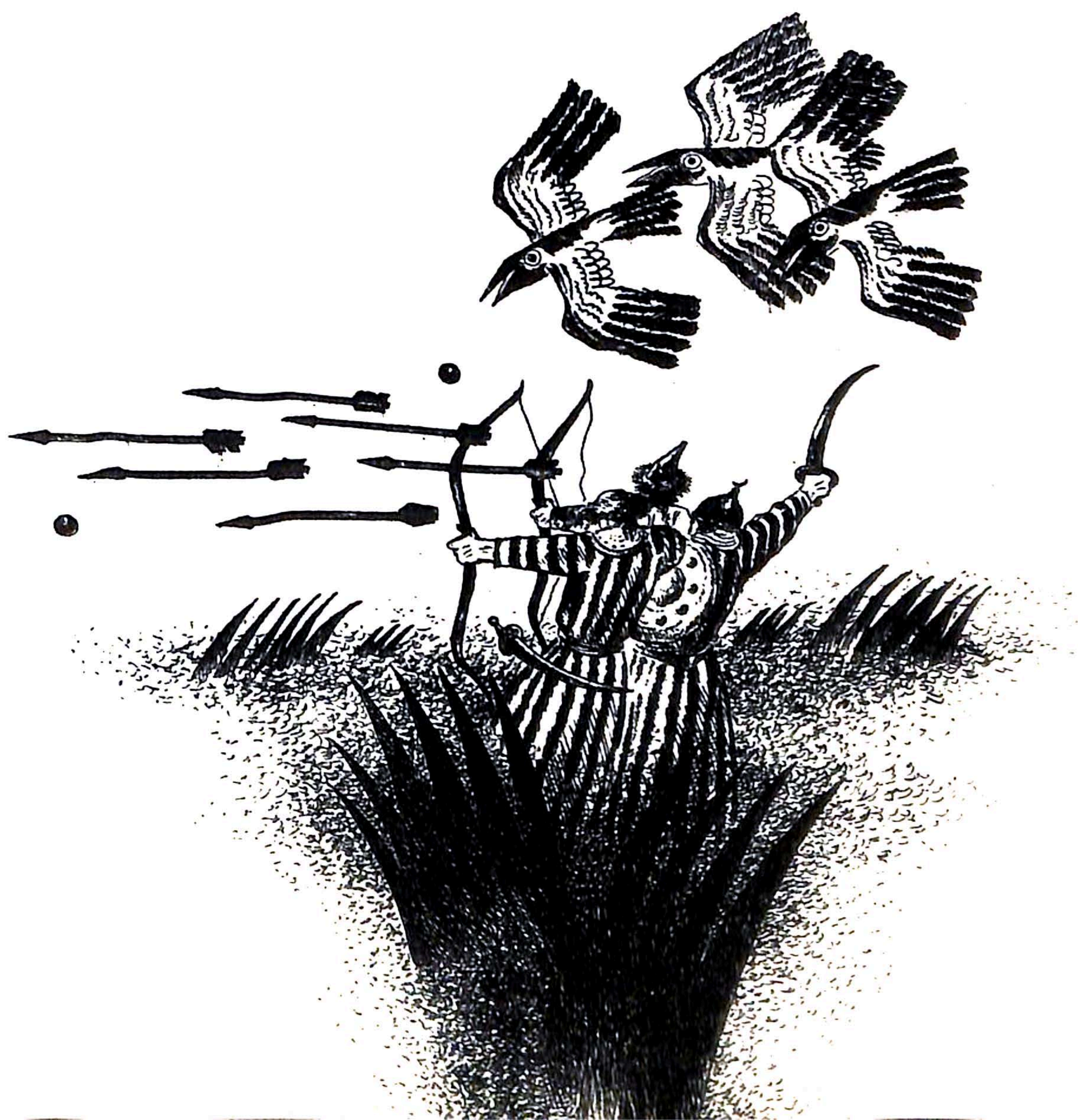
हम बड़े जलपोत पर समुद्र तक पहुंचे, लेकिन वोल्गा के मुहाने में उथले जल में हमारा जलपोत फंस गया। यहां तातारों ने हमें पकड़ लिया और वे जलपोत को खींचकर बांध तक वापस ले गये। वहां उन्होंने हमारे बड़े जलपोत को छीन लिया और चार रूसियों को बंदी बना लिया। हमारा सभी माल-असबाब लूट लेने के बाद उन्होंने हमें समुद्र पार जाने दिया। उन्होंने हमें उल्टी धारा से नहीं जाने दिया, ताकि हम कोई सूचना न भेज सकें।

और हम दो जलपोतों पर देर्बेंत सागर[16] के लिए आगे बढ़े; उनमें से एक पर ईरानियों के साथ राजदूत हसन बेग और हम रूसी – कुल मिलाकर दस लोग तथा दूसरे पर छः मास्कोवासी और त्वेर के छः लोग और गायें तथा रसद थे।



हम समुद्र में तूफ़ान की चपेट में आ गये। छोटा जलपोत तार्की[17] नगर के निकट तट से टकराकर टूट गया और यात्री उतरकर किनारे पर चले गये; तब कुछ काइताक[18] आये और उन्होंने सभी यात्रियों को बंदी बना लिया।

जब हम देर्बेंत पहुंचे तो मालूम हुआ कि वसीली पापिन सही-सलामत पहुंच गया था, जबकि हमें लूट लिया गया था। और मैंने उससे तथा शिर्वानशाह के राजदूत हसन बेग से, जिसके साथ हम लोग वहां पहुंचे थे, तार्की के निकट काइताकों द्वारा पकड़े गये आदमियों को छुड़ाने के लिए अनुनय-विनय की। और हसन बेग ने उन्हें छुड़ाने के लिए याचना की। वह बुलात बेग के पास गया, जिसने एक हरकारा शिर्वानशाह बेग के पास भेजा कि तार्की के तट पर एक रूसी जलपोत टकराकर टूट गया है और कुछ काइताकों ने जलपोत के यात्रियों को बंदी बना लिया है तथा उनका माल-असबाब लूट लिया है। शिर्वानशाह बेग ने तुरंत एक दूत को अपने साले,



काइताक के राजा ख़लिल बेग के पास इस सूचना के साथ भेजा : "मेरा जलपोत तार्की के निकट टूट गया है और तुम्हारे आदमियों ने आकर जलपोत के लोगों को बंदी बना लिया है और उनका माल-असबाब लूट लिया है और तुम मेरी ख़ातिर उन लोगों को मेरे पास भेज दो, उनके माल-असबाब लौटा दो, क्योंकि उन्हें मेरे यहां भेजा गया था। यदि तुम्हें मेरी कोई मदद की ज़रूरत हो, तो मेरे पास आ जाओ और मैं तुम्हें, मेरे भाई, कुछ भी देने से इन्कार नहीं करूंगा। केवल तुम उन्हें मेरी ख़ातिर रिहा कर दो।" और ख़लिल बेग ने तुरंत उन्हें रिहा कर दिया और सभी आदमियों को देर्बेंत भेज दिया और वहां से उन्हें शिर्वानशाह के गढ़ पर भेज दिया गया।

हम भी शिर्वानशाह के गढ़ पर गये और हमने उससे रूस पहुंचने के लिए साज़-सामान मुहैया करने का अनुनय-विनय किया। लेकिन उसने हमें कुछ नहीं दिया,



क्योंकि हम बहुत थे। और हम रोते हुए वहां से इधर-उधर चल दिये। हममें जिनके पास रूस में कुछ था, वे रूस के लिए चल पड़े और जो वहां कर्ज़दार थे, वे जिधर निगाह पड़ी उधर ही चल दिये। कुछ शेमाख़ा[19] में ही रह गये, जबकि दूसरे काम करने के लिए बाकू चले गये।

जहां तक मेरा संबंध है, मैं देर्बेंत चला गया और वहां से बाकू जहां शाश्वत अग्नि जल रही है और बाकू से समुद्र पार करके मैं चापाकुर[20] पहुंचा। वहां मैं छः महीने रहा। इसके बाद मैं माज़ान्देरान प्रदेश में सारी[21] में एक महीना रहा। वहां से मैं आमूल[22] के लिए रवाना हुआ, जहां मैं एक महीना रहा। इसके बाद मैं देमावेन्द[23] और देमावेन्द से रेई[24] गया। वहां शाह हुसैन, अली के पुत्रों और मुहम्मद के पौत्रों को कत्ल कर दिया गया था और उन्होंने उन्हें इतना बुरा अभिशाप दिया कि उनके ७० नगर नष्ट हो गये। मैं रेई से काशान पहुंचा और वहां एक



महीना ठहरा और काशान से नाईन तथा नाईन से येज़्द गया और वहां भी एक महीना रहा। येज़्द से मैं सिर्जान के लिए चला और वहां से तारूम[25] के लिए, जहां लोग मवेशियों को खजूर खिलाते हैं, जो बाज़ार में चार अल्तिन प्रति बात्मान[26] की दर से बिकता है। तारूम से मैं लार[27] गया और लार से बंदर[28] पहुंचा।

और वहीं पर होर्मुज़[29] बंदरगाह तथा हिन्द सागर (हिन्दुस्तान सागर) अवस्थित है। और बंदर से होर्मुज़ तक समुद्र का रास्ता चार मील का है। होर्मुज़ एक ऐसे द्वीप पर बसा है, जहां दिन में दो बार समुद्री बाढ़ आती है। यहीं पर मैंने अपना पहला ईस्टर रखा, क्योंकि यहां मैं त्यौहार के चार हफ़्ते पहले ही पहुंच गया था।

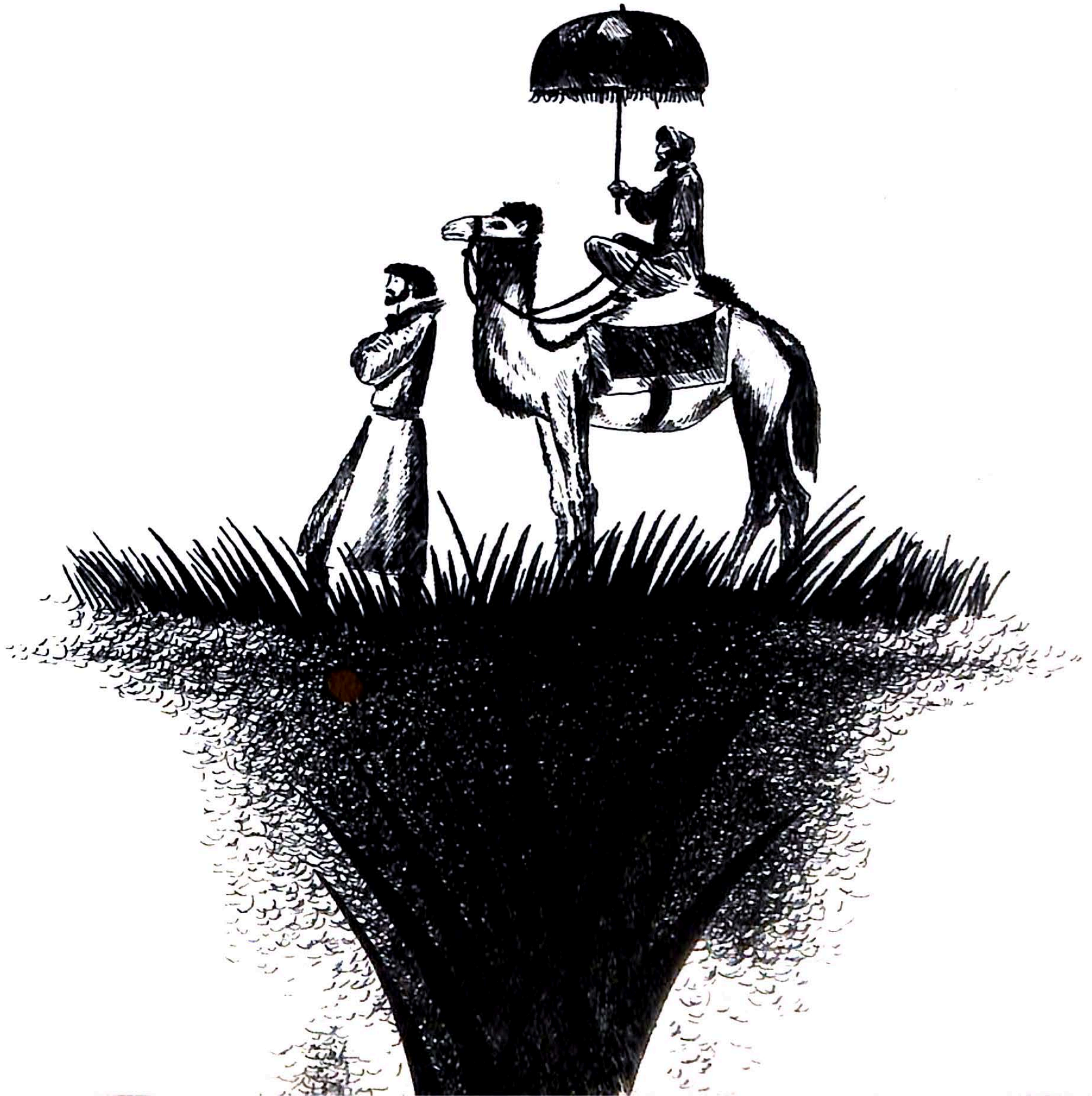
ऊपर मैंने सभी नगरों के नाम नहीं गिनाये हैं, क्योंकि और भी कई बड़े नगर



हैं। होर्मुज़ में सूरज इतना तेज़ चमक रहा है कि शरीर बुरी तरह भुलस सकता है। मैं होर्मुज़ में एक महीना रहा और ईस्टर के बाद पहले हफ़्ते में वहां से घोड़ों के साथ एक डब्बे [30] में हिन्द सागर के पार चल पड़ा।

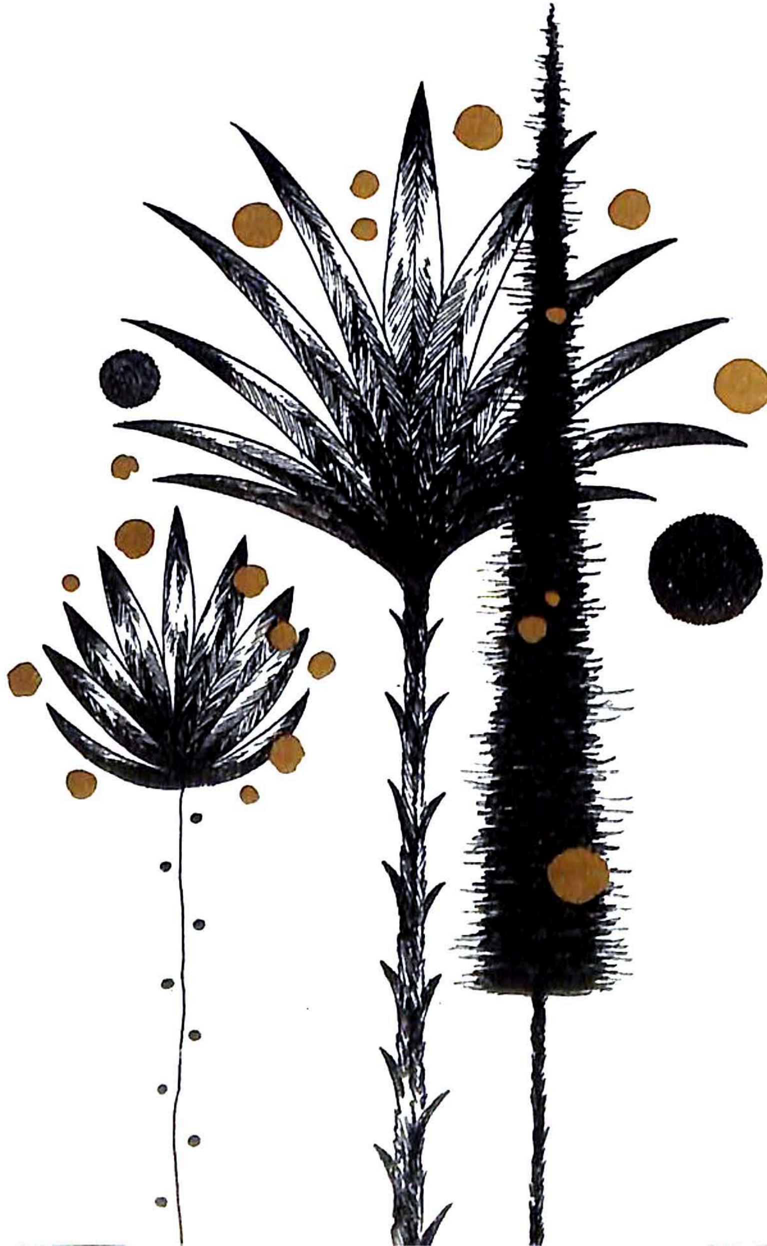
हमें समुद्र से मस्काट [31] पहुंचने में दस दिन तथा मस्काट से देगा [32] पहुंचने में चार दिन लगे। देगा से हम जलपोत से गुजरात के लिए रवाना हुए और गुजरात से खम्भात [33] के लिए जहां नील और लाख पैदा होते हैं। खम्भात से हम चौल [34] पहुंचे। हम ईस्टर के बाद सातवें हफ़्ते में चौल से चल पड़े; और चौल तक डब्बे में हम छः हफ़्ते समुद्र के मार्ग से चलते रहे थे।

और यहीं भारत देश है, जहां लोग नंगे घूमते हैं। स्त्रियां खुले सिर और वक्षस्थल पर बिना कोई वस्त्र धारण किये हुए जाती हैं। वे बालों की चोटी करती हैं। अधिकांश स्त्रियां माताएं हैं, वे हर साल बच्चा जनती हैं और उनके कई-कई



बच्चे हैं। स्त्री-पुरुष सभी काले हैं। जहां कहीं भी मैं जाता था, लोगों का झुंड मेरे पीछे लग जाता था और वे मुझ श्वेत आदमी को बड़े आश्चर्य के साथ देखते थे।

उनका राजा सिर पर फेटा बांधता है और धोती पहनता है; उनके जागीरदार गले में दुपट्टा डालते हैं और धोती पहनते हैं; उनकी रानियां गले में दुपट्टा डालती हैं और साड़ी पहनती हैं। जहां तक राजाओं और जागीरदारों के नौकरों का संबंध है, वे धोती पहनते हैं और अपने हाथों में ढाल और तलवार लिये रहते हैं, जबकि दूसरों के पास भाले, चाकू या कटारें या धनुष और तीर होते हैं। और वे कमर से ऊपर कोई वस्त्र धारण नहीं करते, नंगे पांव रहते हैं और बड़े हट्टे-कट्टे होते हैं। स्त्रियां खुले सिर और वक्षस्थल पर बिना कोई वस्त्र धारण किये जाती हैं। छोटे लड़के-लड़कियां सात साल तक बिल्कुल नंगे घूमते हैं।



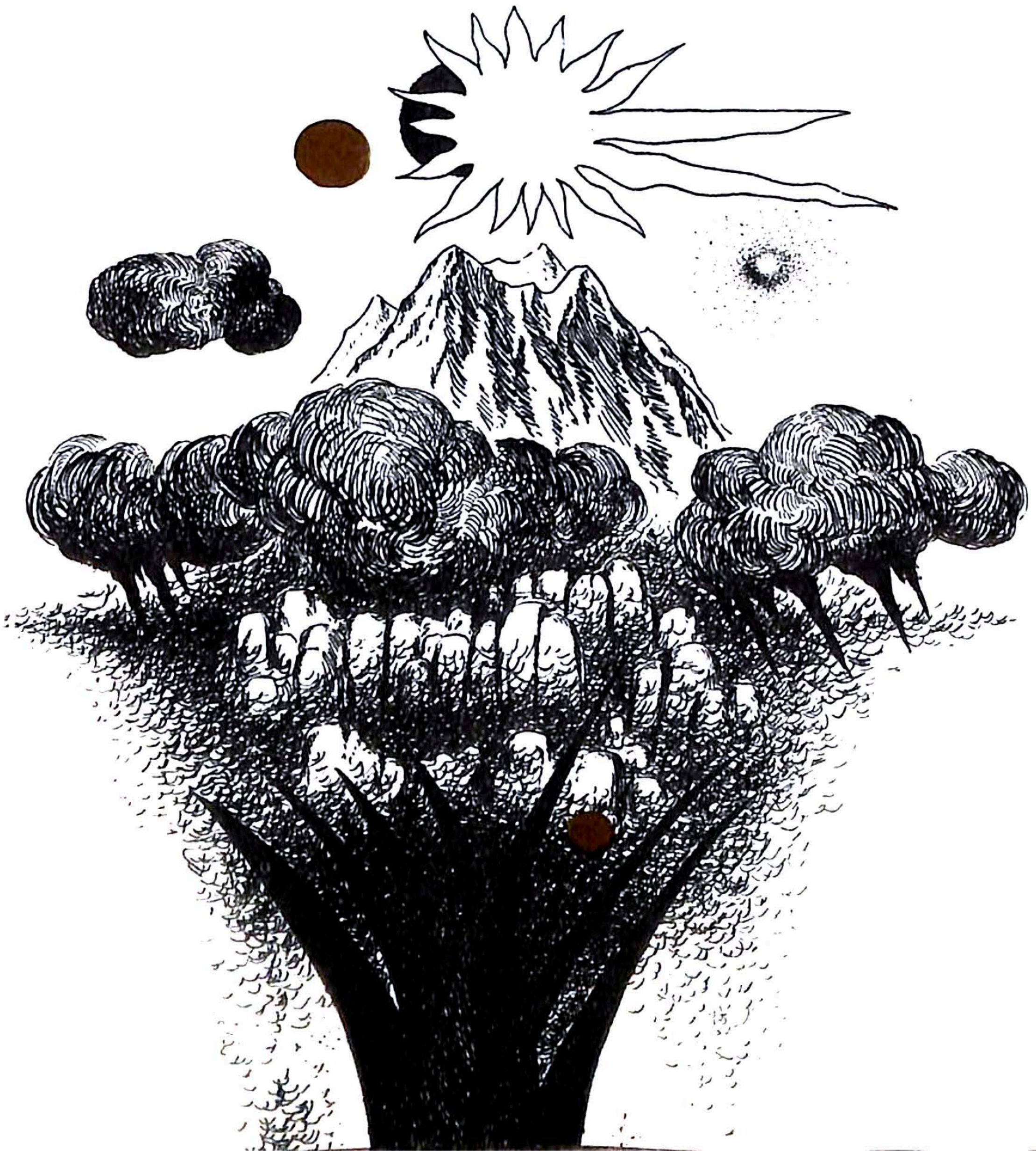
हमें चौल से स्थल-मार्ग से पाली[35] पहुंचने में आठ दिन लगे ; दोनों ही भारतीय नगर हैं। पाली से एक दूसरे भारतीय नगर उम्रा पहुंचने में दस दिन तथा उम्रा से जुन्नार[36] पहुंचने में छः दिन लगे। जुन्नार में मलिकुत्तुज्जार का नौकर भारतीय असद ख़ान[37] रहता है। कहा जाता है कि उसके पास मलिकुत्तुज्जार के ७० हज़ार आदमी हैं। स्वयं मलिकुत्तुज्जार के पास २ लाख आदमी हैं ; २० साल से वह काफ़िरों[38] से लड़ता रहा है। कभी-कभी वे उसे पराजित कर देते हैं, लेकिन अक्सर वही उन्हें पराजित करता रहता है। असद ख़ान पालकी पर चलता है ; उसके पास बहुत से हाथी और अच्छे घोड़े हैं। उसके पास खुरासान[39] के भी बहुत से लोग हैं, जो खुरासान देश या अरब या तुर्कमान देश या चग़ताई[40] से लाये जाते हैं। वे हमेशा समुद्र से डब्वों (भारतीय जलपोतों) में लाये जाते हैं।

और मैं पापी जब भारत आया, तो अपने साथ एक घोड़ा लाया। ईश्वर की



कृपा से मैं जुन्नार अच्छी स्वस्थ अवस्था में पहुंचा। जुन्नार तक आने में मुझे रास्ते में १०० रूबल ख़र्च करने पड़े। वहां जाड़ा त्रित्व रविवार को शुरू हुआ और हमने यह जाड़ा जुन्नार में ही बिताया, जहां हम दो महीने रहे; पूरे चार महीने सर्वत्र दिन-रात पानी और कीचड़ भरा हुआ था। उस मौसम में वे खेतों की जुताई करते हैं, तथा गेहूं, चावल और दाल और अन्य सभी अनाज फ़सलों की बुआई करते हैं। ताड़ से ताड़ी निकाली जाती है और तत्ना[11] से शराब बनायी जाती है। घोड़ों को दाल खिलायी जाती है। प्रातःकाल उन्हें चावल की खली भी खिलायी जाती है। भारत में घोड़े नहीं पाले जाते, लेकिन बैल और भैंसें पाली जाती हैं। उनसे आदमियों और कभी-कभी मालों को लाने ले जाने का काम लिया जाता है – वे तरह-तरह के काम आते हैं।

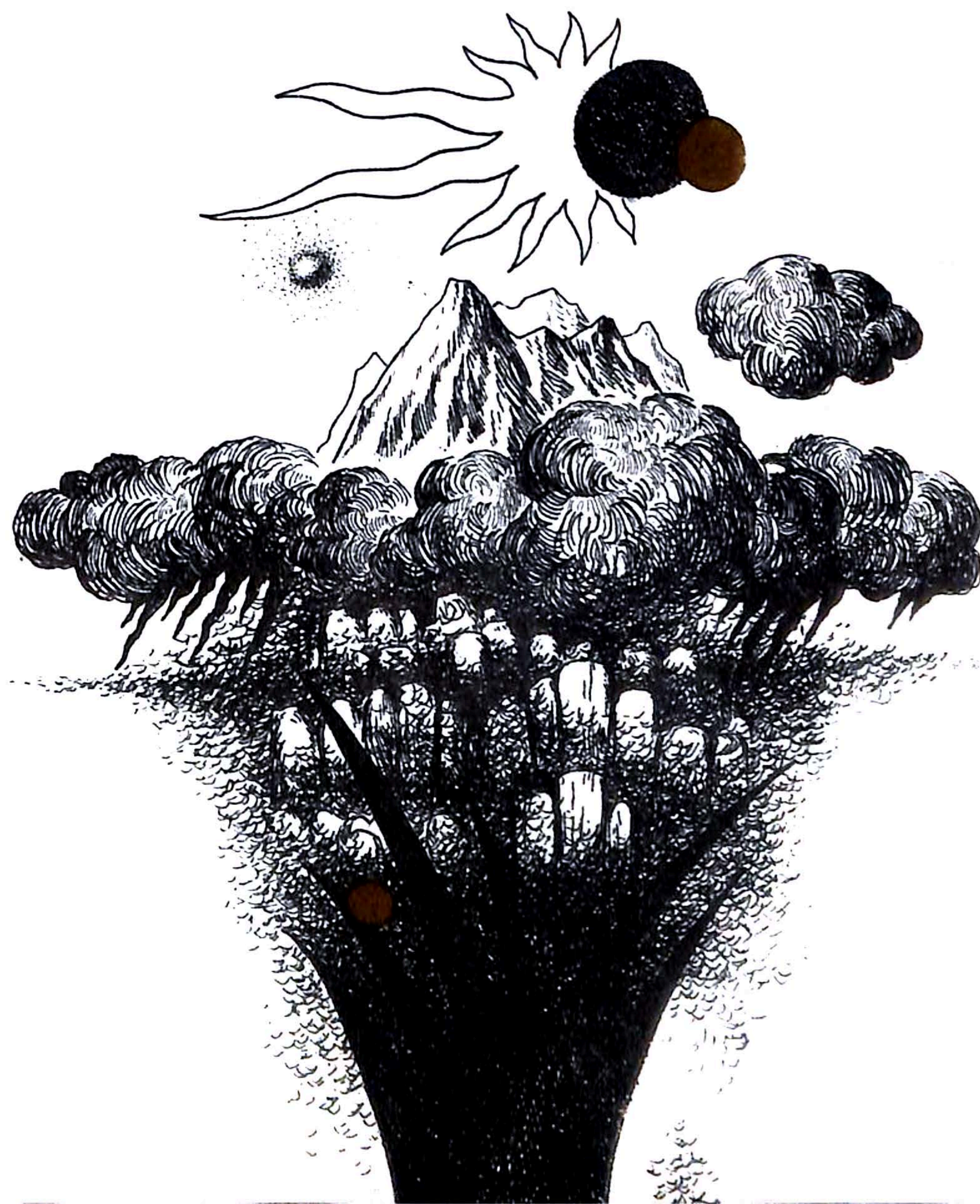
जुन्नार नगर एक पर्वतीय द्वीप पर बसा है और इसे ईश्वर ने बनाया है न



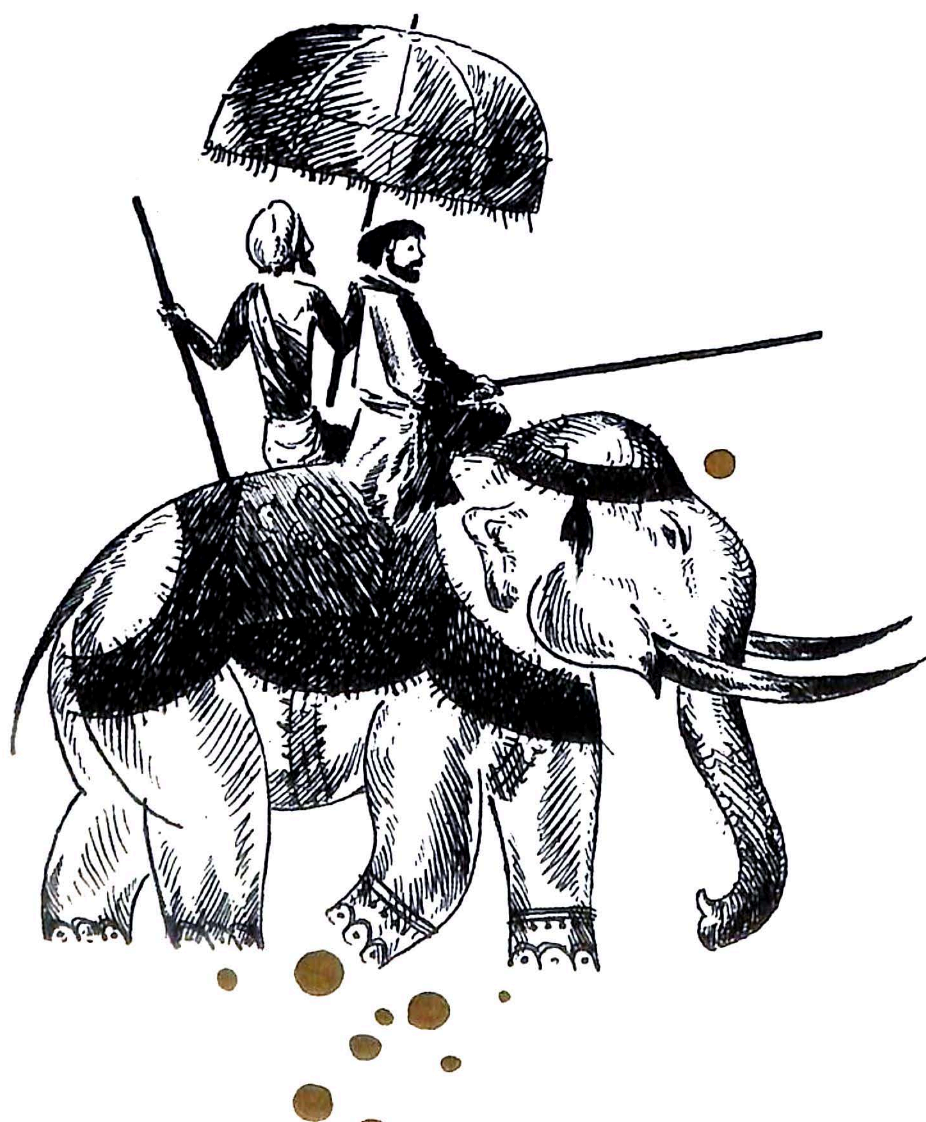
कि आदमियों ने। पहाड़ियों से चढ़कर वहां जाने में पूरा दिन लग जाता है, रास्ता इतना संकरा है कि दो आदमी साथ-साथ नहीं गुज़र सकते।

भारत में परदेशी सरायों में ठहरते हैं और स्त्रियां उनके लिए खाना पकाती हैं और वे ही मेहमानों के लिए बिस्तर लगाती हैं। वहां जाड़ों में लोग धोती पहनते हैं, कंधों पर चादर डालते हैं और पगड़ी बांधते हैं। जहां तक राजाओं और जागीर-दारों का संबंध है, जाड़े के मौसम में वे चूड़ीदार पायजामा, कमीज़ और खफ़्तान पहनते हैं, वे अपने गले में दुपट्टा डालते हैं, कमर में पट्टा और सिर पर फेटा बांधते हैं।

और जुन्नार में खान ने मेरा घोड़ा ले लिया। लेकिन जब उसे मालूम हुआ कि मैं मुस्लिम नहीं, रूसी हूं, तो उसने कहा : "मैं तुम्हारा घोड़ा वापस लौटा दूंगा और एक हज़ार अशर्फ़ियां दूंगा, बशर्ते कि तुम इस्लाम धर्म स्वीकार कर लो।



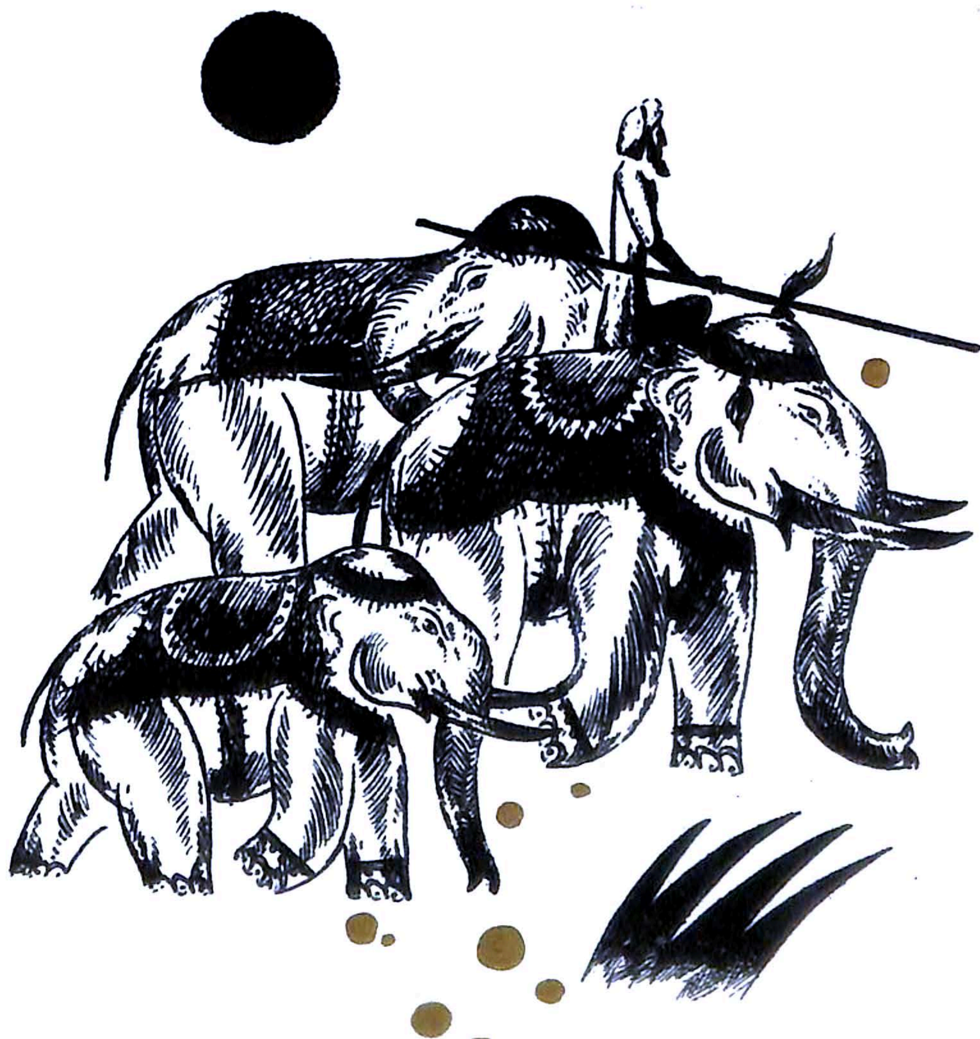
पर यदि तुम हमारा इस्लाम धर्म नहीं स्वीकार करोगे, तो मैं तुम्हारा घोड़ा रख लूंगा और तुम्हें एक हज़ार अशर्फ़ियां लेकर नीलाम कर दूंगा।" और उसने ईश्वर की पवित्र माता के उपवास के दौरान उद्धारक दिवस तक चार दिन की मुहलत दी। और प्रभु ने अपने पवित्र दिवस पर मुझ पर दया की और उन्होंने मुझ अभागे पापी को अपनी दया से वंचित नहीं किया, न ही मुझे जुन्नार में ईश्वरविहीनों के बीच नष्ट होने के लिए छोड़ा। खुरासान का ख़्वाजा मुहम्मद उद्धारक दिवस की पूर्ववेला में आया और मैंने उससे मेरी सहायता करने का अनुनय-विनय किया। और वह नगर में खान के पास गया और उसे समझाया-बुझाया ताकि वह मुझे धर्म-परिवर्तन के लिए विवश न करे। वह मेरा घोड़ा भी वापस ले आया। ऐसा ही चमत्कार प्रभु ने उद्धारक दिवस के अवसर पर किया। इस तरह रूस के मेरे ईसाई भाइयो, तुममें से अगर कोई हिन्दुस्तान जाना चाहता है तो तुम्हें अपना धर्म



रूस में ही त्याग देना चाहिए और हिन्दुस्तान के लिए रवाना होने से पहले मुहम्मद की प्रार्थना करनी चाहिए।

मैं कुछ मुसलमानों के बहकावे में आ गया ; उन्होंने मुझ से कहा था कि वहां वस्तुओं का बाहुल्य है, लेकिन मैंने पाया कि वहां हमारे देश में काम आनेवाली कोई चीज़ नहीं है। सभी चुंगी-मुक्त वस्तुएं केवल मुस्लिम देश के लिए हैं। काली मिर्च और रंग-रोगन सस्ते हैं। कुछ लोग अपनी वस्तुएं समुद्र से ले जाते हैं, अन्य लोग वस्तुओं पर कोई चुंगी नहीं अदा करते। लेकिन वे हमें अपनी वस्तुओं को बिना चुंगी के नहीं ले जाने देंगे। चुंगी बहुत ऊंची है और इसके अलावा समुद्र में बहुत से लुटेरे हैं। और सभी लुटेरे काफ़िर हैं, वे न ईसाई हैं न मुस्लिम ; वे पत्थर की मूर्त्तियों की पूजा करते हैं और ईसा को बिल्कुल नहीं मानते।

हम ईश्वर की पवित्र माता के स्वर्गारोहण दिवस को जुन्नार से एक बड़े नगर



बीदर[42] के लिए रवाना हुए और हमें वहां पहुंचने में एक महीना लगा। बीदर से कुलुनगीर और कुलुनगीर से गुलबर्ग[43] पहुंचने में पांच दिन लगते हैं। इन बड़े नगरों के बीच में और भी कई नगर आते हैं। आम तौर से हम रोज़ ही तीन नगरों और कभी चार नगरों से गुज़रते थे। नगर कोस-कोस पर हैं। चौल से जुन्नार तक २० कोस, जुन्नार से बीदर तक ४० कोस और बीदर से कुलुनगीर तथा गुलबर्ग तक ६-६ कोस हैं।

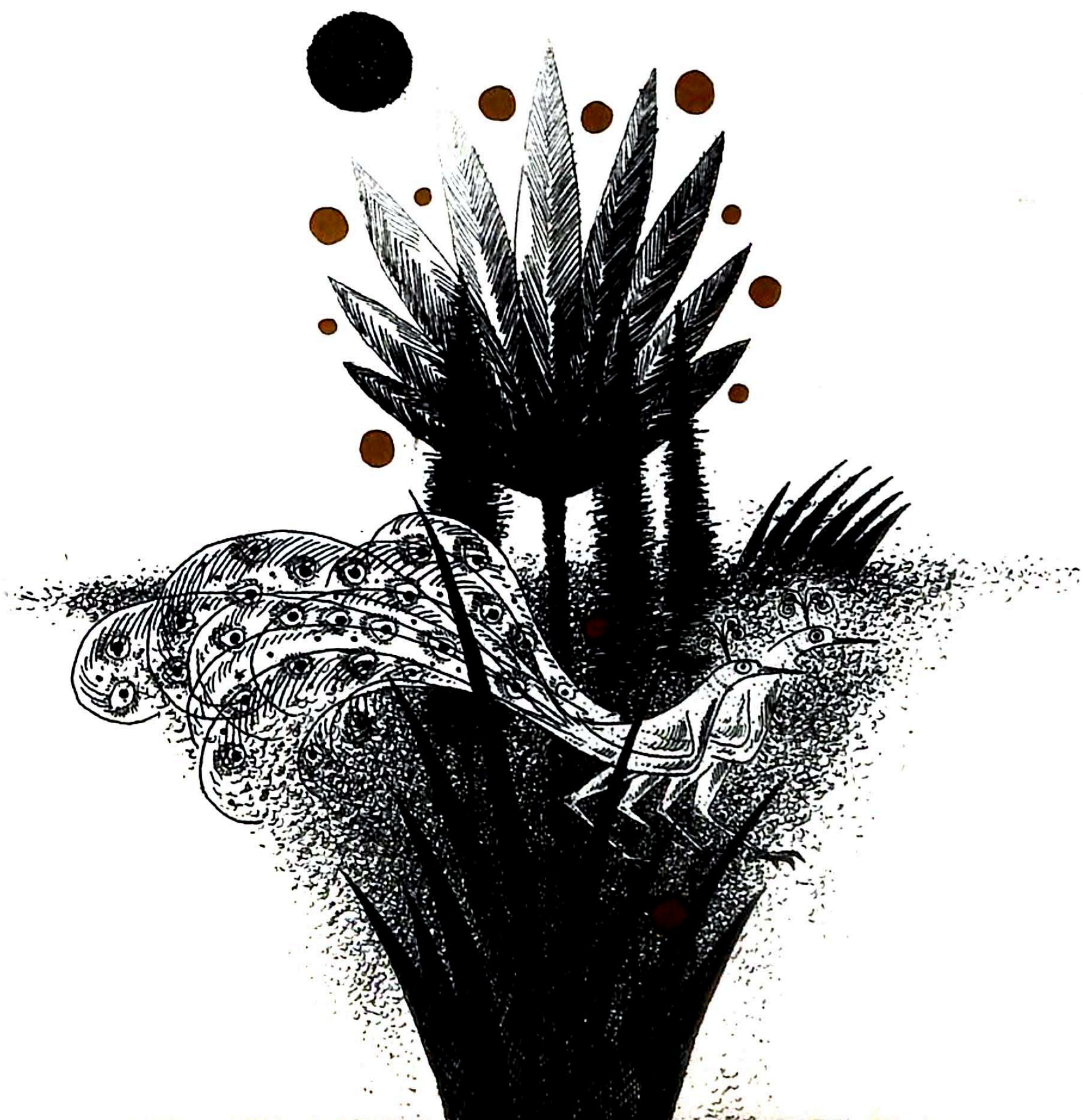
बीदर में घोड़े और तरह-तरह की वस्तुएं बेची जाती हैं: कमख़ाब, रेशम और अन्य सभी वस्तुएं। काले लोगों का भी क्रय-विक्रय होता है। यहां और कोई चीज़ नहीं बेची जाती। और सभी वस्तुएं देशी हैं। जहां तक खाद्य-पदार्थों का संबंध है, केवल शाक-सब्ज़ियां ही बेची जाती हैं। रूस देश के लिए कोई वस्तुएं नहीं मिलतीं।

भारत के सभी राजा खुरासान के हैं और वैसे ही सभी जागीरदार भी। भारत



के लोग पैदल और तेज़ी से चलते हैं। वे कमर से ऊपर कोई वस्त्र धारण नहीं करते, नंगे पांव होते हैं; वे एक हाथ में ढाल और दूसरे में तलवार लिये रहते हैं। कुछ नौकर लंबे, सीधे धनुष और तीर रखते हैं। वे हाथियों पर सवार होकर लड़ने जाते हैं; पैदल सेना आगे-आगे चलती है; कवचधारी खुरासानी घोड़ों पर सवार होते हैं, घोड़ों को भी कवच पहनाया जाता है। हाथियों के दांतों और सूंड़ों में एक-एक कंतार वज़न की तलवारें बांध दी जाती हैं; "उन्हें लोहे के कवच पहनाये जाते हैं। हाथियों की पीठ पर हौदे बांधे जाते हैं और हौदे में तोपों और तीरों से लैस १२ कवचधारी सिपाही बैठते हैं।

वहां एक स्थान – एल्लंदु[44] में शेख़ अलाउद्दीन का मक़बरा है, जहां हर साल मेला लगता है। वहां भारत देश के कोने-कोने से लोग आते हैं और दस दिन तक वस्तुओं का क्रय-विक्रय करते हैं। यह बीदर से १२ कोस है। वहां लगभग २०

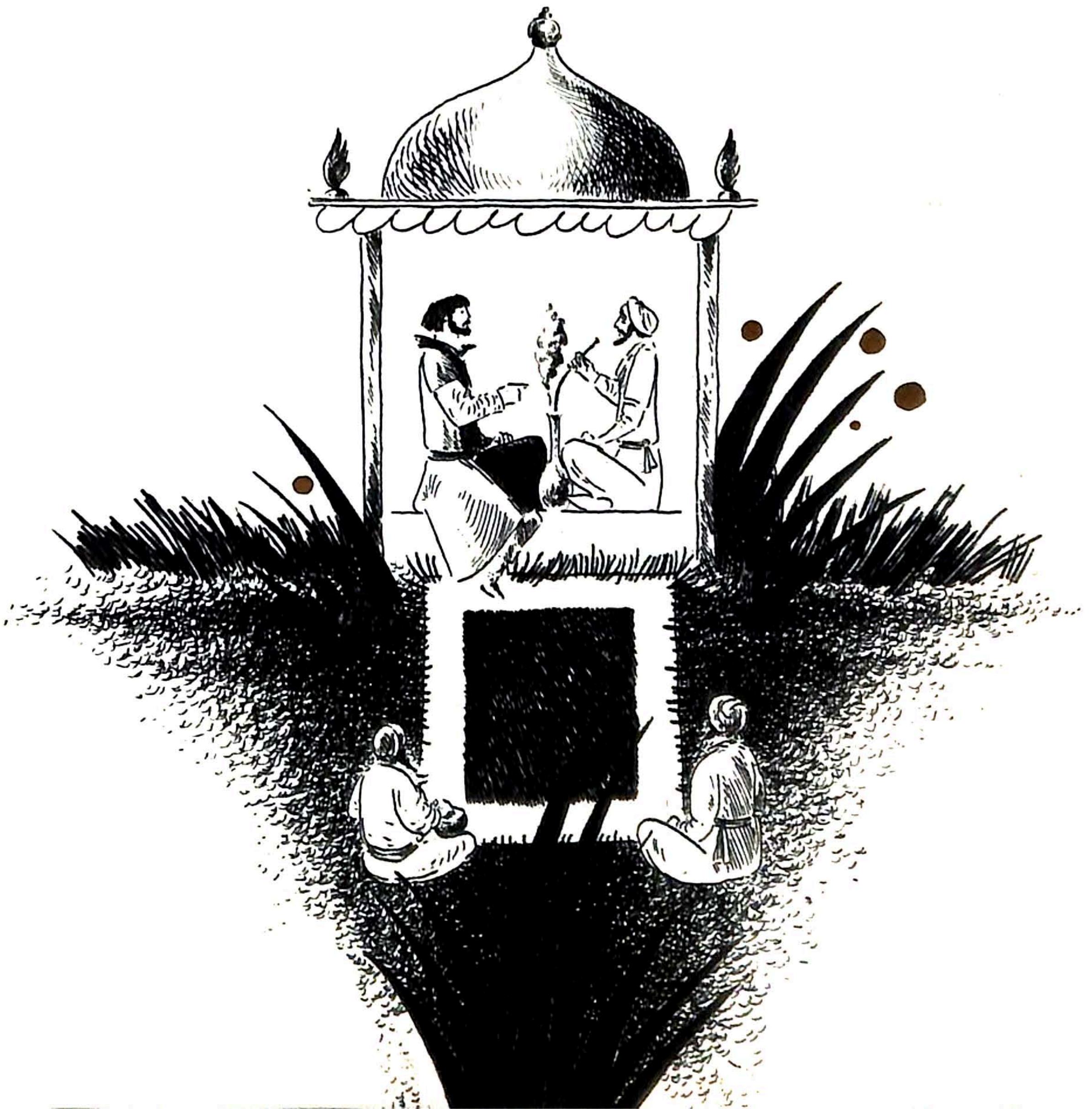


हज़ार घोड़े और अन्य सभी वस्तुएं बिक्री के लिए लायी जाती हैं। यह हिन्दुस्तान का सबसे बढ़िया मेला है। ईश्वर की पवित्र माता की परार्थ-प्रार्थना के रूसी त्यौहार[45] के दौरान शेख़ अलाउद्दीन की स्मृति में वहां तरह-तरह की वस्तुएं खरीदी जाती हैं। एल्लंदु में घुग्घू (उल्लू) पाये जाते हैं। कहा जाता है कि जिस घर की मुंडेर पर उल्लू बैठ जाता है, उस घर में किसी न किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। यदि कोई उसे मारने की कोशिश करता है, तो वह आग उगलने लगता है। "मैमून" रात में शिकार की टोह में निकलते हैं और मुर्गे-मुर्गियों को पकड़ ले जाते हैं; वे पहाड़ों में रहते हैं। बंदर जंगलों में रहते हैं। बंदरों का एक सरदार होता है, जो अपने झुंड का नेतृत्व करता है। यदि कोई उन्हें आघात पहुंचाता है, तो वे अपने सरदार के पास शिकायत करते हैं जो अपने झुंड को आघात पहुंचानेवाले व्यक्ति का पीछा करने के लिए भेज देता है। बंदर उस नगर पर टूट पड़ते हैं, घरों को



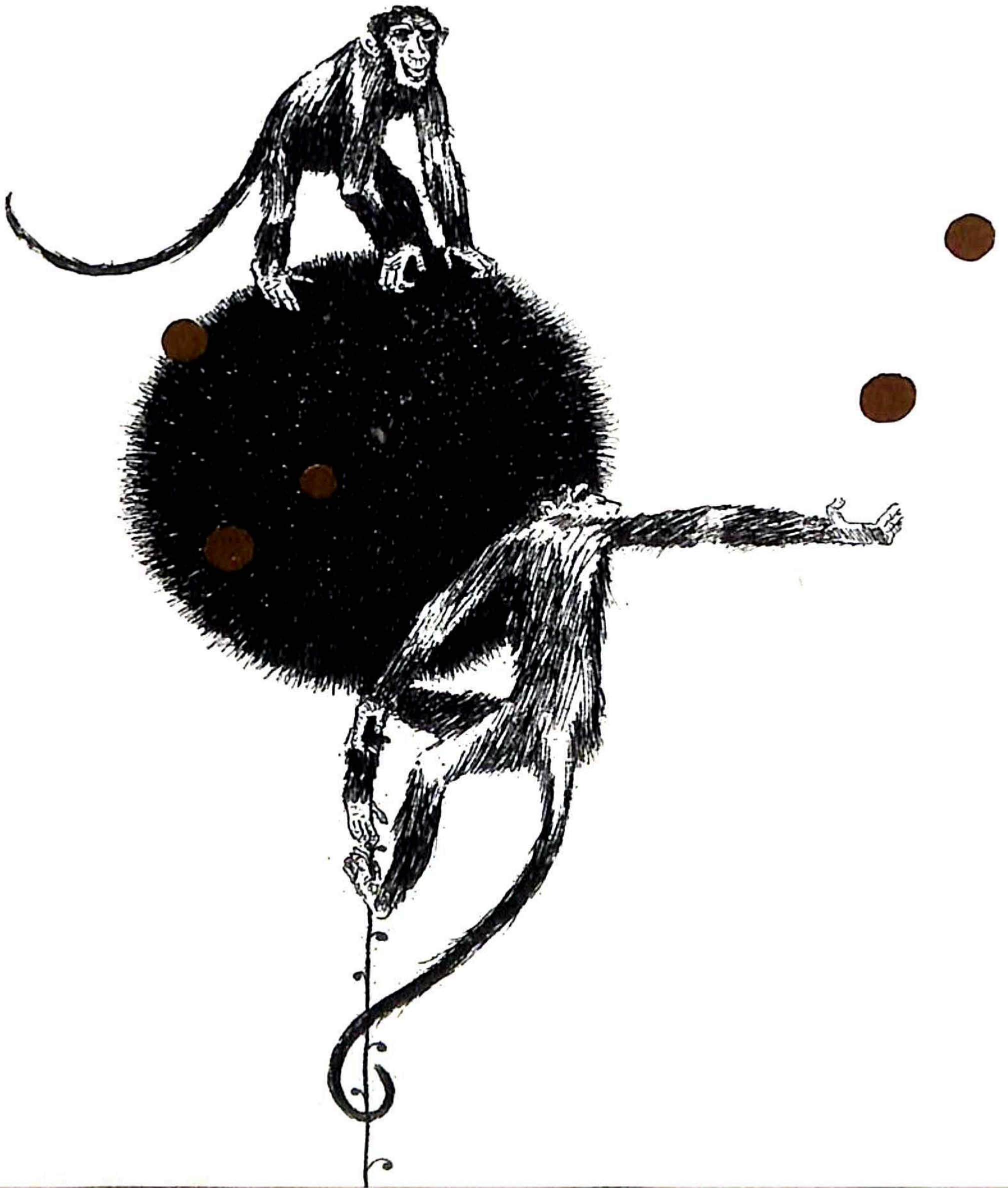
तहस-नहस कर देते हैं और लोगों को मार डालते हैं। कहा जाता है कि उनकी एक विशाल सेना है और वे अपनी ही भाषा बोलते हैं। वे एक साथ कई-कई बच्चों को जन्म देते हैं, लेकिन जो बच्चे अपने मां-बाप पर नहीं जाते, उन्हें वे रास्तों पर ही छोड़ देते हैं। तब हिन्दुस्तान के लोग उन्हें उठा ले जाते हैं, उन्हें मदारी के खेल सिखाते हैं। कुछ को वे बेच देते हैं, लेकिन रात के समय ही बेचते हैं, ताकि वे पुनः भाग कर वापस न लौट आयें। कुछ बंदरों को वे आदमियों की नक़ल करना भी सिखाते हैं।

ईश्वर की पवित्र माता की परार्थ-प्रार्थना के त्यौहार के साथ वसंत का आगमन हुआ। इस त्यौहार के दो हफ़्ते बाद वसंत में ही शेख़ अलाउद्दीन की स्मृति के सम्मान में आठ दिवसीय त्यौहार मनाया जाता है। वसंत, ग्रीष्म, जाड़ा और पतझड़ – प्रत्येक मौसम तीन-तीन महीने का होता है।



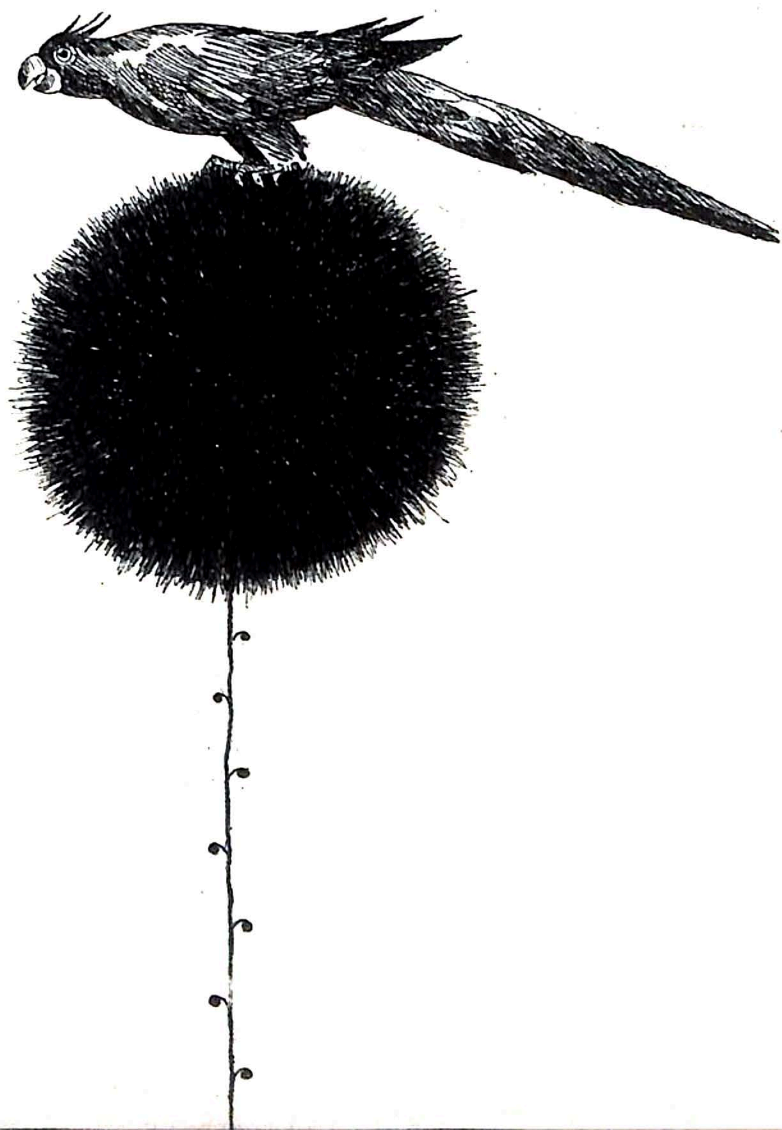
बीदर मुस्लिम हिन्दुस्तान[46] की राजधानी है। यह एक बड़ा शहर है और इसमें बड़ी संख्या में लोग रहते हैं। सुल्तान २० साल का एक नौजवान है और शासक खुरासान के राजा और जागीरदार हैं। लड़ाइयों में लड़नेवाले सिपाही भी खुरासानी ही हैं।

बीदर में खुरासानी जागीरदार मलिकुत्तुज्जार रहता है, जिसके पास दो लाख सिपाहियों की फ़ौज है। मलिक ख़ान के पास एक लाख और फ़रहाद ख़ान[47] के पास २० हज़ार सिपाही हैं। अन्य बहुत से ख़ानों के पास दस-दस हज़ार सिपाहियों की फ़ौजें हैं। सुल्तान ३ लाख की फ़ौज के साथ लड़ने जाता है। भूमि पर आबादी का भार अत्यधिक है। किसान बहुत गरीब हैं, लेकिन जागीरदार बहुत अमीर हैं और ऐशोआराम में रहते हैं। वे चांदी की पालकियों में लाये-ले जाये जाते हैं। उनके आगे स्वर्ण-साज़ों में सज्जित २० घोड़े और पीछे ३०० घुड़सवार, ५०० पैदल सिपाही,



१० तुरहीवादक, १० नगाड़े बजानेवाले और १० शहनाईवादक चलते हैं। सुल्तान जब मनोरंजन पर जाता है, तो साथ में अपनी माता और बेगम को भी ले लेता है। उसके साथ १० हज़ार घुड़सवार और ५० हज़ार पैदल सिपाही तथा सुनहरे कवच पहने २०० हाथी चलते हैं। सुल्तान के आगे १०० तुरहीवादक, १०० नर्तक और स्वर्ण-साज़ में सज्जित ३०० खाली घोड़े और उसके पीछे १०० बंदर तथा १०० गौरिकाएं या दासियां चलती हैं।

सुल्तान के महल में सात फाटक हैं; हर फाटक पर १००-१०० पहरेदार और १००-१०० काफ़िर मुंशी तैनात होते हैं। उनमें से कुछ अंदर आनेवालों और कुछ बाहर जानेवालों का विवरण दर्ज करते हैं। लेकिन परदेशियों को महल में नहीं घुसने दिया जाता। महल बड़ा ख़ूबसूरत है, जिस पर चारों ओर सुनहरी नक्काशी की गयी है। महल के एक-एक पत्थर पर बेलबूटे बनाये गये हैं और उन पर बहुत



सुंदर ढंग से सोने की कलई की गयी है। महल के अंदर तरह-तरह के बर्तन हैं।

बीदर नगर में सुल्तान के एक हज़ार पहरेदार रात को पहरा देते हैं। कवचधारी पहरेदार घोड़े पर सवार होते हैं और हाथ में मशाल लिये रहते हैं। मैंने बीदर में अपना घोड़ा बेच दिया; यह मेरे पास एक साल से था और मैंने इस पर ६८ फ़नाम ख़र्च किये थे। बीदर की सड़कों पर १४-१४ फ़ुट लंबे सांप रेंगते हैं। मैं ईसा के पृथ्वी पर आगमन के उपवास[48] के दौरान कुलुनगीर से बीदर पहुंचा और बड़े दिन पर अपने घोड़े को बेच दिया।

मैं बीदर में चालीसे तक ठहरा। वहां मैंने अनेक हिन्दुओं से परिचय किया और उन्हें बताया कि मैं ईसाई हूं न कि मुस्लिम और कि मेरा नाम अफ़नासी या मुस्लिम भाषा में ख़्वाजा युसूफ़ खुरासानी[49] है। इसके बाद उन्होंने मुझसे न तो अपना खान-



पान, व्यापार, पूजापाठ या और किसी चीज़ को छिपाया और न ही अपनी पत्नियों को।

मैंने उनसे उनके धर्म के बारे में प्रश्न किये और उन्होंने मुझसे कहा: "हम आदम में विश्वास करते हैं और वे कहते हैं कि बुत आदम और उनके सगे रिश्तेदार हैं।" भारत में कुल ८४[50] धर्म पाये जाते हैं और वे सब लोग बुत पर विश्वास करते हैं और अलग-अलग धर्मों के लोग एक साथ खान-पान नहीं करते, न ही अंतर्जातीय विवाह करते हैं। कुछ लोग मांस, मुर्गे-मुर्गियां, मछली और अंडे खाते हैं, लेकिन किसी भी धर्म के लोग गाय का मांस नहीं खाते।

मैं बीदर में चार महीने रहा और कुछ हिन्दुओं के साथ पर्वत[51] पर जाने की बात की, जो उनका यरूशलम या, मुस्लिम भाषा में, मक्क़ा है। वहां उनका बड़ा बुतखाना (मंदिर) है। हम एक महीने में बुतखाना पहुंचे। बुतखाने के पास लगने-



वाला मेला पांच दिन तक चलता है। बुतखाना बहुत बड़ा (त्वेर का आधा) है। यह पत्थर का बना है, जिस पर बुत के कार्यों के बारे में चित्र खुदे हुए हैं। खुदे हुए चित्रों की कुल १२ पंक्तियां हैं, जिनमें बुत के चमत्कार या उसका हिन्दुओं के समक्ष विविध रूपों में प्रकट होना दिखाया गया है। पहला, एक आदमी के रूप में ; दूसरा, हाथी के सिर के साथ एक आदमी के रूप में ; तीसरा, बंदर की शक्ल के एक आदमी के रूप में ; चौथा, भयानक जानवर के धड़ के साथ एक आदमी के रूप में। वह हमेशा उनके समक्ष एक पूंछ के साथ प्रकट हुआ है और उसकी पत्थर में खुदी पूंछ सात फ़ुट लंबी है। भारत देश के कोने-कोने से लोग बुत के चमत्कार का दर्शन करने के लिए बुतखाने के पास एकत्रित होते हैं। बुतखाने के पास पुरुष और स्त्रियां मुंडन कराते हैं। इसके बाद वे बुतखाने में जाते हैं, हरेक को बुत की भलाई के लिए दो शशकनी[52] शुल्क के रूप में देना पड़ता है। घोड़ों

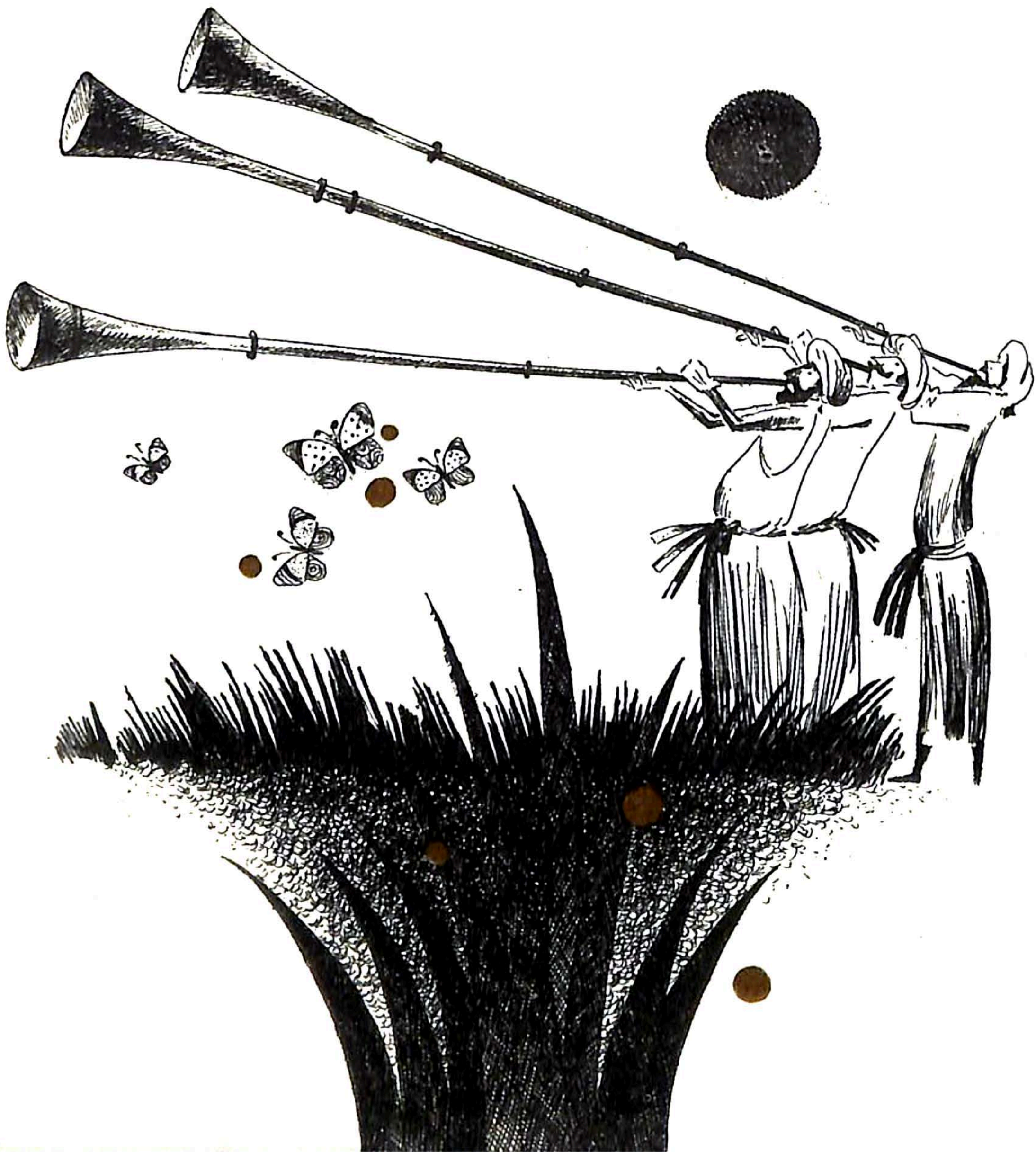


के मालिकों से प्रति घोड़ा चार फ़नाम वसूल किये जाते हैं। बुतखाने आनेवालों की संख्या २० हज़ार और कभी-कभी १ लाख तक पहुंच जाती है। बुतखाने में बुत पत्थर का और बहुत बड़ा है; उसकी पूंछ कंधे से लगी हुई है और उसका दायां हाथ कुस्तुंतुनिया के सम्राट जुस्टिनियन की भांति[53] अभयदान की मुद्रा में ऊंचा उठा हुआ है। वह अपने बायें हाथ में भाला पकड़े हुए है। उसके शरीर पर अधोवस्त्र के अलावा और कुछ नहीं है। उसका चेहरा बंदर का है। अन्य बुत बिल्कुल नंगे हैं और उनकी पत्नियां भी एकदम नंगी हैं और वे अपने बच्चों के साथ हैं। बुत के सामने काले पत्थर का नंदी है, जिस पर सोने की कलई की गयी है। वे नंदी का खुर चूमते हैं और उस पर फूल चढ़ाते हैं। बुत पर भी फूल चढ़ाया जाता है।

हिन्दू बिल्कुल मांस नहीं खाते – वे न तो गाय, बकरे, मुर्ग़े-मुर्ग़ियों का मांस



खाते हैं, न ही मछली और सूअर का मांस, हालांकि सूअर बड़ी संख्या में मिलते हैं। वे दिन में दो बार खाना खाते हैं और रात के समय कुछ नहीं खाते। वे न तो शराब और न ही मध्यासव पीते हैं। वे मुस्लिमों के साथ खान-पान नहीं करते। उनका भोजन रूखा-सूखा होता है और वे एक-दूसरे के साथ खाना नहीं खाते, यहां तक कि अपनी पत्नियों के साथ भी खाना नहीं खाते। वे चावल और घी के साथ खिचड़ी और तरह-तरह की जड़ी-बूटियां खाते हैं, जिन्हें वे दूध और घी में पका लेते हैं। वे दायें हाथ से खाते हैं, बायें हाथ से खाने की कोई चीज़ नहीं छूते। वे छुरी का इस्तेमाल नहीं करते, चमच के बारे में उन्हें कोई जानकारी नहीं है। यात्रा करते समय वे खाना पकाने के लिए एक हंड़िया अपने साथ ले लेते हैं। वे हंड़िये को ढककर रखते हैं ताकि मुस्लिम उसमें रखे खाने को देख न सकें। और यदि खाने पर किसी मुस्लिम की नज़र पड़ जायेगी, तो उसे हिन्दू नहीं खायेगा।



कुछ लोग खाते समय खाने और अपने को भी अंगोछे से ढक लेते हैं, ताकि उन्हें कोई देख न पाये।

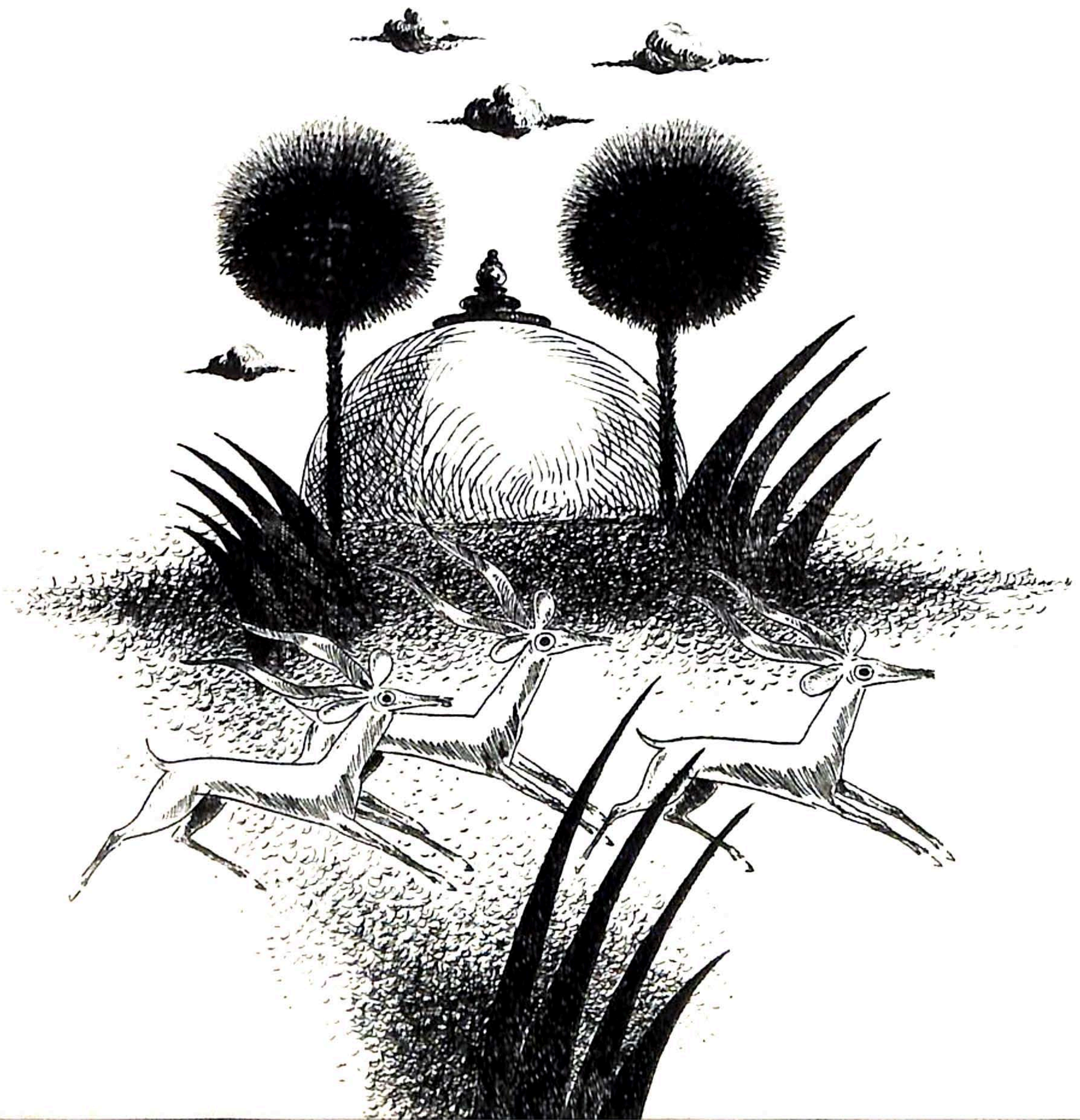
वे रूसी ढंग से पूर्व की ओर मुंह करके प्रार्थना करते हैं; वे साष्टांग योग से पूजा करते हैं। खाना खाने से पहले वे अपने हाथ-पैर और मुंह धो लेते हैं। उनके बुतखाने में कोई दरवाज़े नहीं होते और बुतखानों का रुख़ पूर्व की ओर होता है। जब कोई मरता है, तो वे उसका दाह-संस्कार करते हैं और भस्मी को नदी में प्रवाहित कर देते हैं। जब स्त्री बच्चे को जन्म देती है तो उसका पति ही बच्चे को प्राप्त करता है। पुत्र का नाम पिता द्वारा और पुत्री का नाम माता द्वारा दिया जाता है। मिलते या विदा लेते समय लोग संन्यासियों की भांति झुककर दोनों हाथों से चरणस्पर्श करते हैं।

चालीसे के दौरान वे अपने बुत की पूजा करने के लिए पर्वत जाते हैं। मुस्लिम



भाषा में यह उनका यरूशलम या मक़्क़ा है। वहां आनेवाले पुरुष केवल अधोवस्त्र और स्त्रियां केवल धोती पहने हुए होती हैं। कुछ स्त्रियां मोतियों की मालाएं और नीलमणियां, सोने के कंगन और अपनी-अपनी राशियों की अंगूठियां भी पहने हुए होती हैं। लोग बैलों पर सवार होकर बुतखाना जाते हैं। बैलों के सींगों पर पीतल मढ़ा होता है और उनकी गर्दन में ३०० छोटी - छोटी घंटियों की मालाएं बांधी जाती हैं तथा उनके पैरों में नाल लगे होते हैं। वे गाय को "माता" कहते हैं। वे गोबर के उपले बनाते हैं और उनसे खाना पकाते हैं। वे अपने चेहरों और शरीर पर भस्म लगाते हैं। यह उनका धर्मसार है। वे रविवार और सोमवार को दिन में केवल एक बार ही भोजन करते हैं।

आला बैराम[54] के दो हफ़्ते पहले मैं पर्वत से बीदर आया। मुझे ठीक-ठीक नहीं मालूम कि ईसा के पुनर्जीवन का महान दिवस, ईस्टर रविवार कब पड़ता



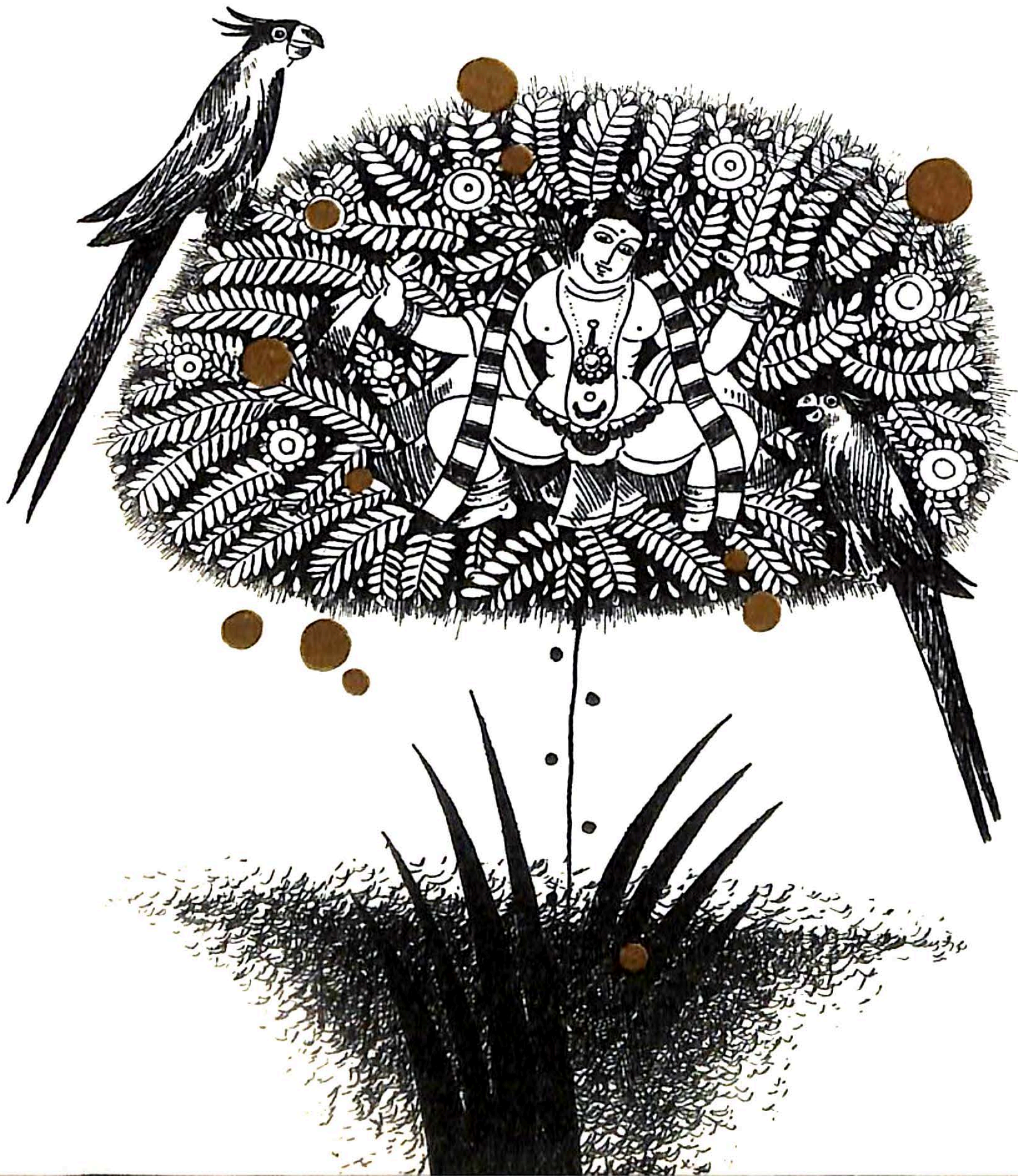
है, अतः मैं मुस्लिम त्यौहारों से अंदाज़ लगाता हूं: ईस्टर आला बैराम के नौ-दस दिन पहले पड़ता है। मेरे पास कोई किताबें नहीं हैं। जब हम रूस से चले थे, तो हमने अपने साथ किताबें भी रख ली थीं। पर जब तातारों ने हमें लूटा, तो वे अपने साथ किताबें भी लेते गये। अब मुझे ईसाई धर्म और ईसाई त्यौहारों के बारे में कुछ नहीं याद रहा: मुझे नहीं मालूम कि ईस्टर, ईसा का पुनर्जीवन, बुधवार या शुक्रवार कब पड़ते हैं। और अन्य धर्मों के बीच मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह मेरी रक्षा करे: "हे प्रभु ईश्वर, हे सत्य के ईश्वर, हे ईश्वर, तू दयालु है, हे स्रष्टा ईश्वर, तू मेरा प्रभु है। ईश्वर एक है, जो यश का राजा, स्वर्ग और पृथ्वी का स्रष्टा है।"

मैं यह सोचते हुए रूस लौट रहा हूं कि मेरा धर्म विनष्ट हो गया है, क्योंकि मैंने मुस्लिमों के साथ उपवास रखा है। मार्च का महीना गुज़र चुका है, एक महीने



से मैंने बिल्कुल मांस नहीं खाया है; मैं मुस्लिमों के साथ रोज़ा रखता रहा हूं, न मैंने चर्बी खायी है, न ही कोई मुस्लिम खाद्य-पदार्थ। मैं दिन में दो बार रोटी और पानी के अलावा और कुछ नहीं ग्रहण करता हूं। और मैं स्वर्ग तथा पृथ्वी के स्रष्टा, सर्वशक्तिमान् ईश्वर की प्रार्थना करता रहा हूं और केवल ईश्वर, कृपालु ईश्वर, सर्वशक्तिमान् ईश्वर के नाम का ही स्मरण करता रहा हूं।

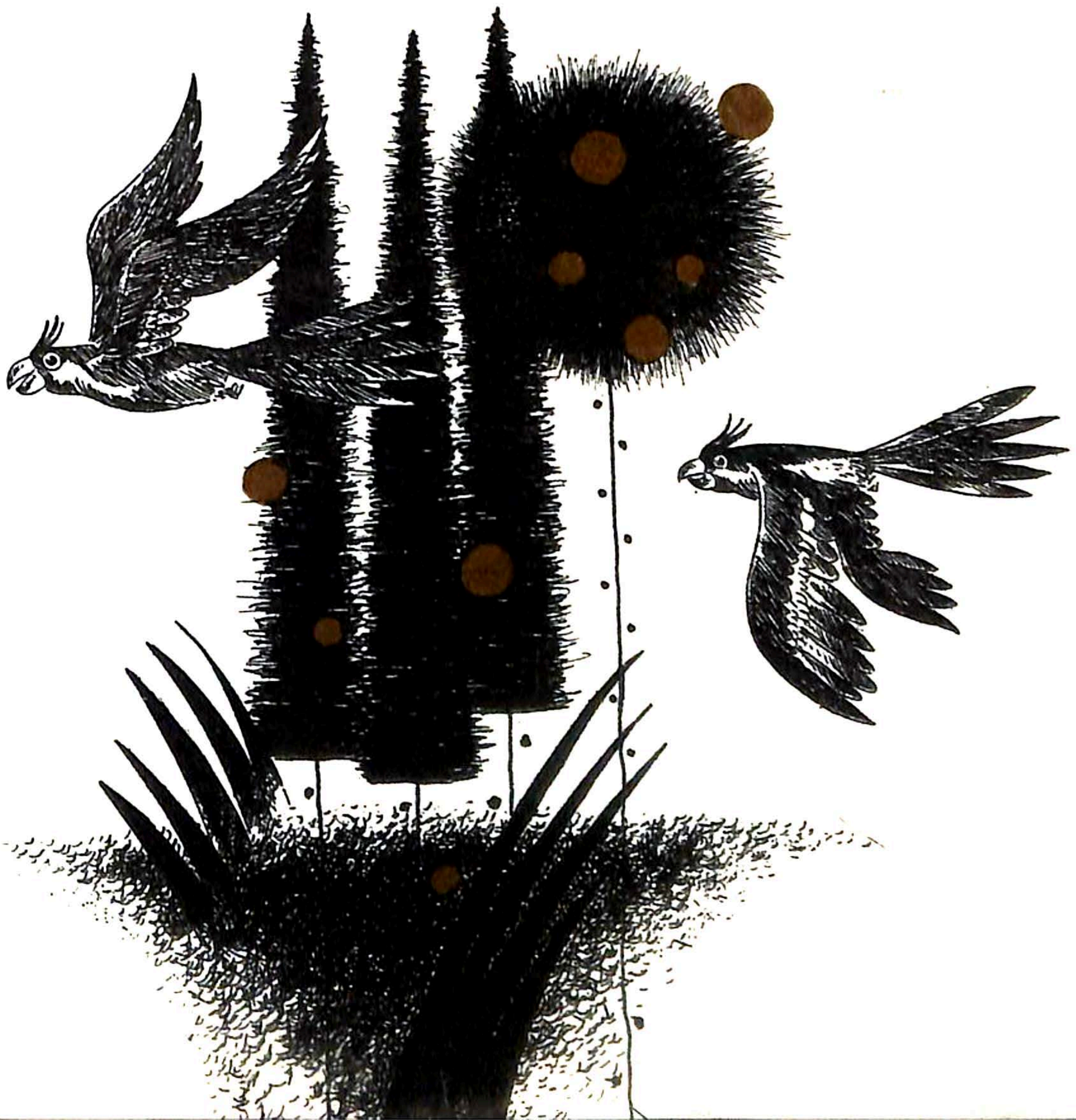
होर्मुज़ से कल्हाट पहुंचने में दस दिन, कल्हाट से देगा और देगा से मस्काट पहुंचने में छः-छः दिन, मस्काट से गुजरात पहुंचने में दस दिन, गुजरात से खम्भात पहुंचने में चार दिन, खम्भात से चौल पहुंचने में १२ दिन और चौल से धाबुल [55] पहुंचने में छः दिन लगते हैं। धाबुल हिन्दुस्तान में अंतिम मुस्लिम बंदरगाह है। धाबुल से कालीकट [56] पहुंचने में २५ दिन, कालीकट से श्रीलंका पहुंचने में १५ दिन, श्रीलंका से शाबात [57] पहुंचने में एक महीना, शाबात से पेगु [58] पहुंचने में



२० दिन, पेगु से चीन और माचीन[59] पहुंचने में एक महीना लगता है। ये सभी यात्राएं समुद्री मार्ग से की जाती हैं। स्थल मार्ग से चीन से किताय[60] पहुंचने में छः महीने और समुद्री मार्ग से चार दिन लगते हैं। ईश्वर मेरे आश्रय की शोभा बढ़ाये।

होर्मुज़ एक बड़ा बंदरगाह है। यहां दुनिया के सभी भागों के लोग आते हैं और इसके बाज़ार में सभी तरह की वस्तुएं उपलब्ध हैं। पृथ्वी पर जो कुछ भी पैदा होता है, वह होर्मुज़ में मिल सकता है। लेकिन चुंगी अत्यधिक – वस्तु का दसवां भाग – है।

खम्भात बंदरगाह से जलपोत हिन्द सागर में सभी दिशाओं में जाते हैं। खम्भात में वस्तुओं का बाहुल्य है: यहां अलाचा[61], ताफ़्ता, ऊन के मोटे कपड़े, नील, लाख, कोर्नेलियन और लौंग भी मिलते हैं। धाबुल एक बड़ा बंदरगाह है और वहां मिस्र,



अरब, खुरासान, तुर्की और पुराने होर्मुज़ से घोड़े लाये जाते हैं। यहां से बीदर और गुलबर्ग स्थल मार्ग से पहुंचने में एक महीना लगता है।

कालीकट हिन्द सागर के तट पर एक विशाल बंदरगाह है और यहां से गुज़रने-वाले जलपोत को भगवान बचाये! इससे आगे जानेवाला कोई भी व्यक्ति समुद्र को सही-सलामत ढंग से नहीं पार कर सकेगा। यहां काली मिर्च, अदरक, जायफल, दालचीनी, लौंग और मसाले तथा तरह-तरह की जड़ी-बूटियां पैदा होती हैं। यहां वस्तुएं बहुत सस्ती हैं। दास-दासियां काले और बहुत अच्छे हैं।

श्रीलंका हिन्द सागर में एक बड़ा बंदरगाह है। वहां आदम एक ऊंचे पर्वत[62] पर खड़ा हुआ था। श्रीलंका के निकट मूल्यवान पत्थर, माणिक्य, स्फटिक, गोमेदक, डामर, बेरिल और एमरी पाये जाते हैं। वहां हाथी पाले जाते हैं और हस्त-परिमाण के अनुसार बेचे जाते हैं; शुतुरमुर्ग तौल कर बेचे जाते हैं।



हिन्द सागर के तट पर शाबात का बंदरगाह बहुत बड़ा है। वहां छोटे-बड़े सभी खुरासानियों को एक टंका[63] की दिहाड़ी दी जाती है और जब कोई खुरासानी शादी करता है, तो शाबात का राजा उसे एक हज़ार टंका देता है। इसके अलावा वह उसे दस टंका प्रति माह तनख़ाह और दस टंका भोजन के लिए देता है। शाबात में रेशम, चंदन और मोती मिलते हैं और ये सभी सस्ते हैं।

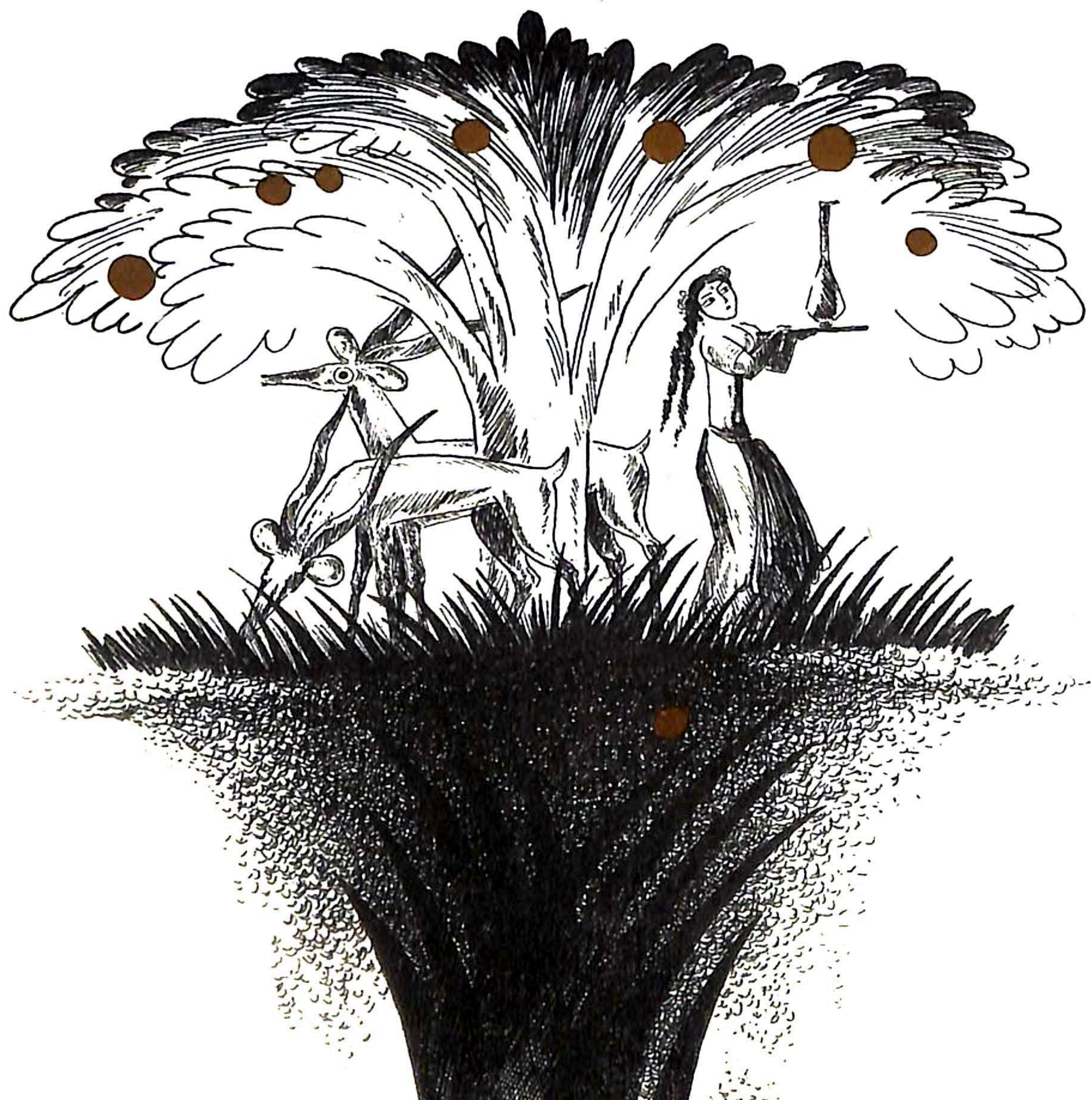
पेगु का बंदरगाह भी कोई छोटा नहीं है और यहां अधिकांशतया हिन्दू दरवेश रहते हैं। यहां मूल्यवान पत्थर, माणिक्य, नीलमणियां और लालमणियां पायी जाती हैं। दरवेश मूल्यवान पत्थरों को बेचते हैं। चीन और माचीन के बंदरगाह बहुत बड़े हैं, जहां चीनी मिट्टी के बर्तन बनाये जाते हैं और वज़न के अनुसार कम कीमत पर बेचे जाते हैं।

समुद्री मार्ग से बीदर से शाबात पहुंचने में तीन महीने और धाबुल से शाबात



पहुंचने में दो महीने, बीदर से माचीन तथा चीन पहुंचने में चार महीने लगते हैं। वहां चीनी मिट्टी के बर्तन बनाये जाते हैं और सभी चीज़ें बहुत सस्ती हैं। समुद्री मार्ग से श्रीलंका पहुंचने में दो महीने लगते हैं। शाबात में रेशम, मोती, चीनी मिट्टी के बर्तन और चंदन पाये जाते हैं। हाथी हस्त-परिमाण के अनुसार बेचे जाते हैं।

श्रीलंका में बंदर, लालमणियां, स्फटिक तथा कालीकट में काली मिर्च, जायफल, लौंग, सुपारी और रंग-रोगन पाये जाते हैं। गुजरात में नील और लाख तथा खम्भात में कोर्नेलियन पैदा होता है। रायचूर[64] में नये या पुराने हीरों की खुदाई होती है। हीरे की बिक्री प्रति पोच्का[65] पांच रूबल की दर से होती है। यदि हीरा बहुत अच्छा होता है, तो वह प्रति पोच्का दस रूबल की दर से बिकता है। लेकिन नये हीरे का एक पोच्का का मूल्य पांच कनी[66], काले हीरे का मूल्य चार से छः कनी और सफ़ेद हीरे का मूल्य एक टंका होता है। हीरों की खुदाई चट्टानी क्षेत्रों में होती



है। नये हीरों की खानें प्रति हस्त-परिमाण २,००० स्वर्ण पौंड तथा पुराने हीरों की खानें १०,००० स्वर्ण पौंड की दर से बेची जाती हैं। हीरे की खानें सुल्तान के नौकर मलिक ख़ान के अधिकार में हैं और ये बीदर से ३० कोस की दूरी पर हैं।

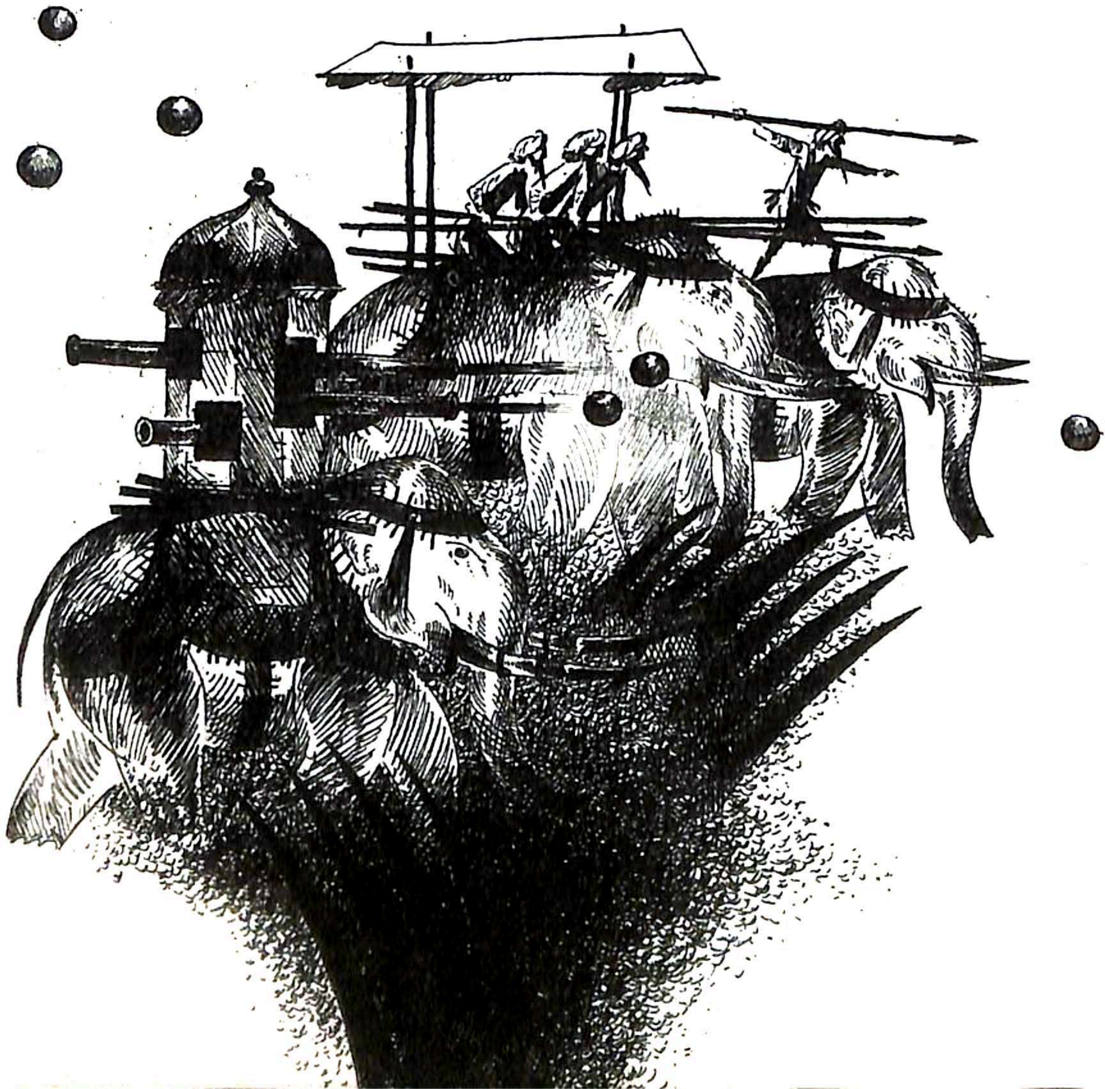
यहूदी शाबातियों को अपना मानते हैं, लेकिन यह सही नहीं है। शाबाती न तो यहूदी हैं, न मुस्लिम और न ही ईसाई। उनका अपना एक अलग हिन्दू सम्प्रदाय है। वे यहूदियों और मुस्लिमों के साथ खान-पान नहीं करते, न ही मांस खाते हैं। शाबात में सभी चीज़ें बहुत सस्ती हैं और वहां रेशम और शक्कर बनाये जाते हैं जो बहुत सस्ते हैं। जंगलों में जंगली बिल्लियां और बंदर पाये जाते हैं। वे लोगों पर हमला करते हैं, अतएव बिल्लियों और बंदरों के भय से कोई रात को सफ़र करने का साहस नहीं करता।



स्थल मार्ग से शाबात से किताय पहुंचने में दस महीने और समुद्री मार्ग से बड़े जलपोत से चार महीने लगते हैं।

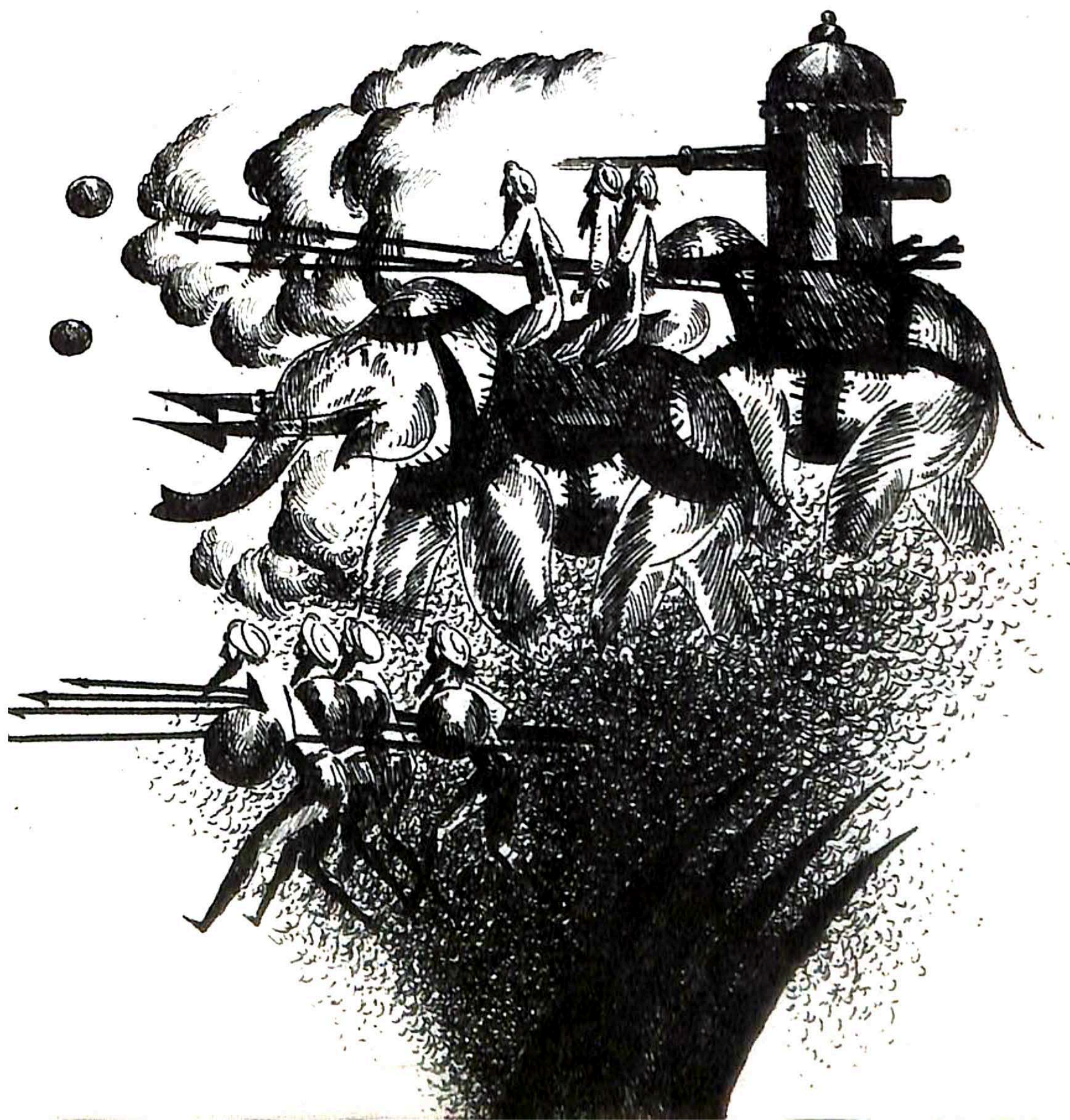
नर हिरन की नाभि काटकर कस्तूरी निकाली जाती है।

मई महीने में मैंने हिन्दुस्तान में बीदर में ईस्टर रखा। मुस्लिमों ने मई महीने में बुधवार को बैराम रखा था और मैंने अप्रैल के पहले दिन से उपवास शुरू किया था। हे निष्ठावान् ईसाइयो, विदेशों की यात्रा करनेवाले प्रायः गुनाह करते हैं और अपने को ईसाई धर्म से वंचित कर देते हैं। और मैं, अफ़नासी, प्रभु का सेवक, पूरे दिल से अपने धर्म के प्रति तरसता रहा हूं। चालीसा और ईस्टर चार बार गुज़र चुके हैं, लेकिन मुझ पापी को यह नहीं मालूम कि ईस्टर, चालीसा, बड़ा दिन या कोई और पवित्र दिवस कब आते हैं, न ही मुझे यह मालूम है कि बुधवार या शुक्रवार कब पड़ते हैं। जब तातारों ने मुझे लूटा, तो माल-असबाब के साथ



मेरी किताबें भी लुट गयीं। और चूंकि मुझे बहुत सी मुसीबतों का सामना करना पड़ा, इसलिए मैं भारत गया। मेरे पास रूस ले जाने के लिए कुछ नहीं रह गया था। मैंने पहला ईस्टर रविवार काइन[67] में, दूसरा चापाकुर (माज़ान्देरान प्रदेश) में, तीसरा होर्मुज़ में और चौथा भारत में, बीदर में मुस्लिमों के साथ बिताया। और वहां मैंने ईसाई धर्म के प्रति आंसू बहाये।

मलिक ख़ान एक लंबे अर्से तक इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिए मुझ पर दबाव डालता रहा। लेकिन मैंने उत्तर दिया: "श्रीमान्, तुम अपनी ईश्वर-प्रार्थना करते हो और मैं अपनी करता हूं। तुम पांच बार नमाज़ पढ़ते हो और मैं तीन बार ईश्वर-प्रार्थना करता हूं। मैं परदेशी हूं और तुम नहीं हो।" पर उसने कहा: "बेशक, हालांकि तुम मुस्लिम बनना नहीं चाहते हो, लेकिन तुम ईसाई धर्म को भी नहीं जानते।" और तब मैंने इस पर काफ़ी सोच-विचार किया तथा अपने मन में कहा:



"मुझ, कम्बख्त पापी पर कष्ट पड़े, क्योंकि मैं सच्चे मार्ग से विचलित हो गया हूं और चूंकि मुझे और कोई पथ नहीं मालूम है, इसलिए मुझे अपने ही रास्ते जाना चाहिए। सर्वशक्तिमान् ईश्वर, स्वर्ग और पृथ्वी के स्रष्टा, अपने शोकाकुल सेवक से अपना मुख मत मोड़ो। मुझे शरण दो तथा मुझ पर दया करो, हे मेरे स्रष्टा ईश्वर, हे प्रभु, मुझे सत्य मार्ग से न हटाओ, बल्कि अपने सत्य मार्ग पर ही रखो, क्योंकि मैंने अपनी विपत्ति में विवशतः तेरे लिए कुछ भी भला नहीं किया है और मैं अपने सभी दिन बुराई में ही बिताये हैं। मुस्लिम देश में चार ईस्टर रविवार बीत चुके हैं, लेकिन मैंने ईसाई धर्म नहीं छोड़ा है और ईश्वर ही जानता है कि अभी और क्या-क्या होना है। मुझे तुम पर विश्वास है, हे प्रभु, हे मेरे ईश्वर, मुझे बचाओ!"

मुस्लिम हिन्दुस्तान में महान बीदर में मैंने ईस्टर रात्रि के आकाश को देखा:



ईस्टर की प्लायोडिज, ओरायन निचाई पर खड़े थे और सप्तर्षि पूर्व की ओर बढ़ रहा था। .

मुस्लिम बैराम के दौरान सुल्तान का जुलूस निकला; उसके साथ २० वज़ीर और लोहे के कवचों तथा धातु के हौदों से सुसज्जित ३०० हाथी थे। प्रत्येक हौदे में तोपों और पुराने ढंग की बंदूकों से लैस छः-छः कवचधारी सिपाही और सबसे बड़े हाथी पर १२ सिपाही बैठे हुए थे। प्रत्येक हाथी पर दो बड़े झंडे थे और उसके दांतों में एक-एक कंतार वज़न की दो तलवारें बंधी हुई थीं। हाथियों की सूंड़ों में भारी लोहे के वज़न बंधे हुए थे और कंधे पर बैठे कवचधारी महावत अंकुश से कोंचकर उन्हें हांक रहे थे। जुलूस में स्वर्ण-साज़ में १,००० घोड़े, नगाड़ा बजानेवालों के साथ १०० ऊंट, ३०० तुरहीवादक, ३०० नर्तक और ३०० दासियां थे। सुल्तान नील-मणियों से जटित ख़फ़्तान और हीरा-जटित ताज पहने हुए था। उसका सगदक[68]



नीलमणियों से सज्जित था और वह सोने के म्यानों में तीन तलवारें लिये हुए था। उसकी गद्दी सोने की थी। एक काफ़िर आगे-आगे छाते से बाज़ीगरी करते हुए दौड़ रहा था और उसके पीछे बहुत से पैदल सिपाही चल रहे थे। सुल्तान के पीछे जड़ाऊ कवच पहने एक सधा हुआ हाथी भी चल रहा था। उसकी सूंड़ में ज़ंजीर बंधी हुई थी, जिससे वह लोगों और घोड़ों पर प्रहार करता था, ताकि वे सुल्तान के आसपास न आ सकें। सुल्तान का भाई सोने की पालकी पर चल रहा था, उसके ऊपर मख़मल का छत्र था, जिसकी चोटी मणियों से जटित थी। पालकी को २० कहार ले जा रहे थे। सुल्तान सोने की पालकी पर बैठा था, उसके ऊपर रेशम का छत्र था, जिसकी चोटी सोने की थी। उसकी पालकी को स्वर्ण-साज़ में चार घोड़े खींच रहे थे। सुल्तान के इर्दगिर्द बड़ी भीड़ चल रही थी और उसके आगे-आगे गायक तथा अनेक नर्तक चल रहे थे। सभी के पास तलवारें, कटारें, ढाल, भाले, बर्छे थे। सभी घोड़ों



को कवच और सगदक पहनाये गये थे। कुछ लोग धोती के अलावा और कोई वस्त्र नहीं धारण किये थे।

बीदर में पूर्ण चंद्रमा तीन दिन तक रहता है। वहां कोई मीठी शाक-सब्ज़ियां नहीं मिलतीं। हिन्दुस्तान में गर्मी उतनी तेज़ नहीं है जितनी कि होर्मुज़ और बहरीन[69], जहां मोती पाये जाते हैं, जिद्दा[70], बाकू, मिस्र, अरब और लार में। खुरासान की भूमि भी गर्म है, लेकिन उतनी गर्म नहीं है। चग़ताई में भी बहुत गर्मी पड़ती है। शिराज़, येज़्द और काशान में भी गर्मी पड़ती है, लेकिन वहां कभी-कभी आंधी भी चलती है। गिलान[71] में अत्यंत उमस-भरी गर्मी पड़ती है और बहुत नम होती है। और शेमाख़ा में भी। बाविल (बगदाद), होम्स[72] और दमिश्क में भी गर्मी पड़ती है। लेकिन अलेप्पो[73] उतना गर्म नहीं है। सिवास[74] और जार्जिया देश में सभी वस्तुओं का बाहुल्य है। तुर्की देश भी समृद्ध है। वलाकिया[75] भी समृद्ध है और वहां सभी



खाद्य-पदार्थ सस्ते हैं। पोदोलिया[76] में भी सभी चीज़ों की प्रचुरता है। ईश्वर रूसी देश की रक्षा करे! दुनिया में ऐसा कोई देश नहीं है, हालांकि रूस में जागीरदार अन्यायपूर्ण हैं। हे ईश्वर, रूस देश में सुव्यवस्था और न्याय कायम हो! हे ईश्वर!

हे ईश्वर, मैं तुम में विश्वास करता हूं, हे प्रभु, मुझे बचाओ! हिन्दुस्तान से मैं कहां जाऊं? यदि मैं होर्मुज़ जाता हूं, तो वहां से खुरासान, चग़ताई, बहरीन या येज़्द का कोई रास्ता नहीं है। सर्वत्र संघर्ष चल रहा है। सर्वत्र राजाओं के तख़्ते उलट दिये गये हैं। मिर्ज़ा जहां शाह को अजां हसन बेग ने क़त्ल कर दिया है और सुल्तान अबू सईद को ज़हर देकर हत्या कर दी गयी। अजां हसन बेग ने शिराज़ में शासन करने की कोशिश की, लेकिन उस देश ने उसे कोई मान्यता नहीं दी। यादगार मुहम्मद भय के मारे उसके यहां नहीं आयेगा। और कोई रास्ता नहीं है। मक्क़ा के रास्ते जाने का मतलब इस्लाम धर्म का अपनाना होगा। अपने धर्म



के कारण ही ईसाई मक़्क़ा नहीं जाते, क्योंकि वहां उन्हें इस्लाम धर्म अपनाने के लिए विवश किया जायेगा। और हिन्दुस्तान में रहने का मतलब वह सब कुछ खर्च कर देना होगा, जो मेरे पास है, क्योंकि यहां हर चीज़ महंगी है। केवल भोजन पर ही मैं रोज़ाना ढाई अल्तीन खर्च कर रहा हूं। जहां तक शराब या मध्यासव का संबंध है, मैंने यहां उन्हें कभी नहीं पिया।

मलिकुत्तुज्जार ने समुद्री लुटेरों के दो हिन्दू नगरों पर अधिकार कर लिया। उसने सात राजाओं और उनके खज़ानों—नीलमणियों की एक पेटी, हीरों और लालमणियों की एक पेटी तथा मूल्यवान वस्तुओं की १०० पेटियों—पर कब्ज़ा कर लिया। उसकी फ़ौज ने खूब माल-असबाब लूटा। दो लाख पैदल सिपाहियों, १०० हाथियों और ३०० ऊंटों की फ़ौज के साथ उसने दो साल तक नगर पर कब्ज़ा बनाये रखा। कुर्बान बैराम—रूसी सेंट पीटर्स दिवस—को मलिकुत्तुज्जार अपनी फ़ौज



के साथ बीदर पहुंचा। सुल्तान ने १० वज़ीरों को नगर से दस कोस की दूरी पर उसका मुकाबला करने के लिए भेजा। प्रत्येक वज़ीर के पास १० हज़ार सिपाहियों और १० कवचधारी हाथियों की फ़ौज थी।

मलिकुत्तुज्जार के महल में रोज़ाना ५०० लोग भोजन करते हैं। उसके साथ तीन वज़ीर भोजन करने बैठते हैं और हर वज़ीर के साथ ५० लोग और १०० जागीरदार होते हैं। मलिकुत्तुज्जार की घुड़साल में २,००० घोड़े हैं और १,००० ज़ीन कसे घोड़े दिन-रात तैयार रहते हैं। इसके अलावा उसकी हथसाल में १०० हाथी हैं। रात में १०० कवचधारी पहरेदार उसके दरबार की रक्षा करते हैं और २० तुरहीवादक, १० नगाड़ा बजानेवाले हैं तथा दो तंबूरची १० बड़े तंबूर बजाते हैं।

निज़ामुलमुल्क, मलिक ख़ान और फ़रहाद ख़ान ने अपने साथ एक लाख सिपाहियों की फ़ौज और ५० हाथी लेकर तीन बड़े शहरों पर कब्ज़ा कर लिया। उन्होंने



तरह-तरह के मूल्यवान पत्थरों की एक विशाल मात्रा प्राप्त की – उन्होंने मूल्यवान पत्थरों, नीलमणियों और हीरों को मलिकुत्तुज्जार के लिए खरीद लिया। उसने जौ-हरियों को मूल्यवान पत्थरों को उन व्यापारियों को बेचने से रोक दिया, जो ईश्वर की पवित्र माता के स्वर्गारोहण दिवस पर बीदर पहुंचे थे।

सुल्तान बृहस्पतिवार और मंगलवार के दिन मनोरंजन पर जाता है और उसके साथ तीन वज़ीर भी जाते हैं। सुल्तान का भाई हर सोमवार को मनोरंजन पर जाता है, साथ में उसकी माता और बहन भी जाती हैं। २,००० स्त्रियां घोड़े पर सवार होकर या सोने की पालकियों में जाती हैं। उनके आगे स्वर्ण-साज़ में १०० खाली घोड़े चलते हैं और उनके साथ बहुत से लोग पैदल चलते हैं। सुल्तान के साथ १२ वज़ीर और ५० हाथी होते हैं। हाथियों की पीठ पर सजावट के लिए झूलें डाल दी जाती हैं। प्रत्येक हाथी पर चार आदमी सवार होते हैं, जो धोती के अलावा और कोई



वस्त्र नहीं धारण किये होते हैं। उनके पीछे पीने तथा स्नान के लिए जल लिये हुए स्त्रियां चलती हैं। वे एक-दूसरे का जूठा पानी नहीं पीते।

मलिकुत्तुज्जार हिन्दुओं पर विजय करने के लिए शेख़ अलाउद्दीन स्मृति दिवस – यानी ईश्वर की पवित्र माता की परार्थ-प्रार्थना के रूसी त्यौहार पर – को बीदर से रवाना हुआ। उसके पास ५० हज़ार सिपाहियों की फ़ौज थी। सुल्तान ने ५० हज़ार सिपाहियों की अपनी फ़ौज तथा ३० हज़ार सिपाहियों की एक और फ़ौज के साथ तीन वज़ीरों को भेजा। उनके साथ १०० बख्तरबंद हाथी गये, जिन पर हौदे कसे गये थे और प्रत्येक हाथी पर बंदूकों से लैस चार सिपाही बैठे हुए थे। मलिकुत्तुज्जार विजयनगर[77] के हिन्दू राज्य पर विजय करने के लिए चला था।

विजयनगर के राजा के पास ३०० हाथी, एक लाख पैदल और ५० हज़ार घुड़सवार सिपाहियों की फ़ौजें थीं। सुल्तान ने बीदर नगर से ईस्टर रविवार के



वाद आठवें महीने में कूच किया और उसके साथ २६ मुस्लिम तथा छः हिन्दू वज़ीर थे। सुल्तान के दरबार से एक लाख घुड़सवार और दो लाख पैदल सिपाहियों की फ़ौजें, ३०० बख्तरबंद, हौदे कसे हाथी भेजे गये और १०० भयानक जानवरों को दो-दो ज़ंजीरों में बांधकर नियंत्रण में रखा गया था। सुल्तान के भाई के दरबार से एक लाख घुड़सवार सिपाहियों और एक लाख पैदल सिपाहियों की फ़ौजों और १०० बख्तरबंद हाथियों को कूच किया गया। मल्ल ख़ान के दरबार से २० हज़ार घुड़सवार सिपाही और ६० हज़ार पैदल सिपाही तथा २० हाथी सैन्यबद्ध होकर लड़ने गये। बदर ख़ान और उसके भाई के साथ ३० हज़ार घुड़सवार सिपाही, एक लाख पैदल सिपाही और २५ बख्तरबंद हाथी सैन्यबद्ध होकर युद्ध-मैदान में उतरे। सुल ख़ान के दरबार से १० हज़ार घुड़सवार सिपाही, २० हज़ार पैदल सिपाही और १० हौदे कसे हाथी गये। वज़ीर ख़ान के साथ १५ हज़ार घुड़सवार सिपाही, ३०

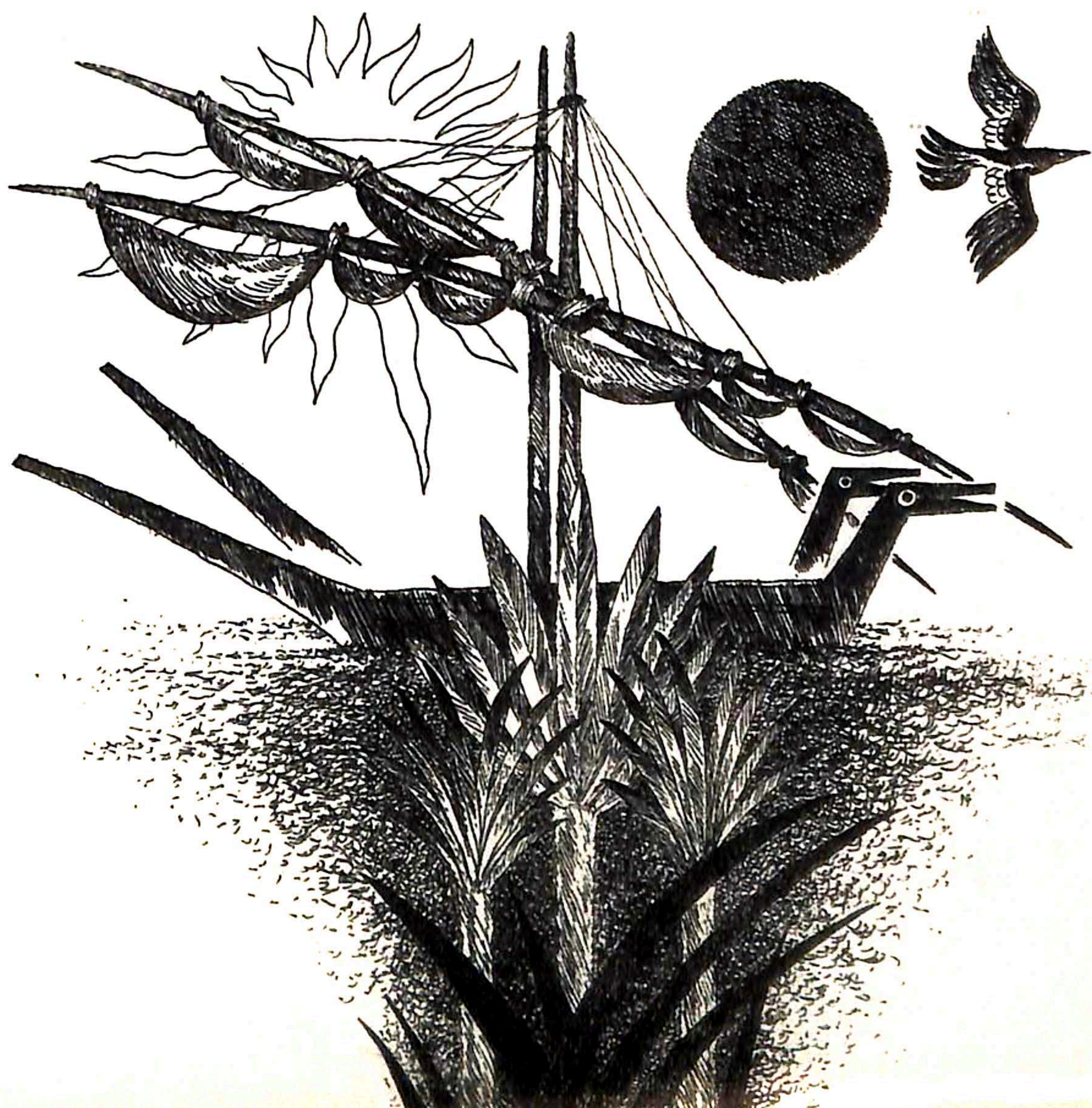


हज़ार पैदल सिपाही और १५ हाथी सैन्यबद्ध होकर चले। कुतार ख़ान के दरबार से १५ हज़ार घुड़सवार सिपाही, ४० हज़ार पैदल सिपाही और १० हाथी गये। प्रत्येक वज़ीर के साथ १० हज़ार और कुछ के साथ १५ हज़ार घुड़सवार सिपाही और २० हज़ार पैदल सिपाही गये। हिन्दू ऑटोनोमोस[78] के साथ ४० हज़ार घुड़सवार सिपाहियों, एक लाख पैदल सिपाहियों तथा ४० बख़्तरबंद हाथियों की फ़ौज गयी। हाथियों पर बंदूकों से लैस चार-चार सिपाही बैठे हुए थे। सुल्तान के साथ २६ वज़ीर गये, जिनमें से प्रत्येक के साथ १० हज़ार घुड़सवार सिपाहियों और २० हज़ार पैदल सिपाहियों की फ़ौज थी और कुछ के साथ १५ हज़ार घुड़सवार सिपाहियों और ३० हज़ार पैदल सिपाहियों की फ़ौज थी। चार बड़े हिन्दू वज़ीरों में से प्रत्येक के पास ४० हज़ार घुड़सवार सिपाही और एक लाख पैदल सिपाही थे। और सुल्तान हिन्दू वज़ीरों से इस बात पर नाराज़ हो गया था कि उन्होंने इतनी कम फ़ौज के

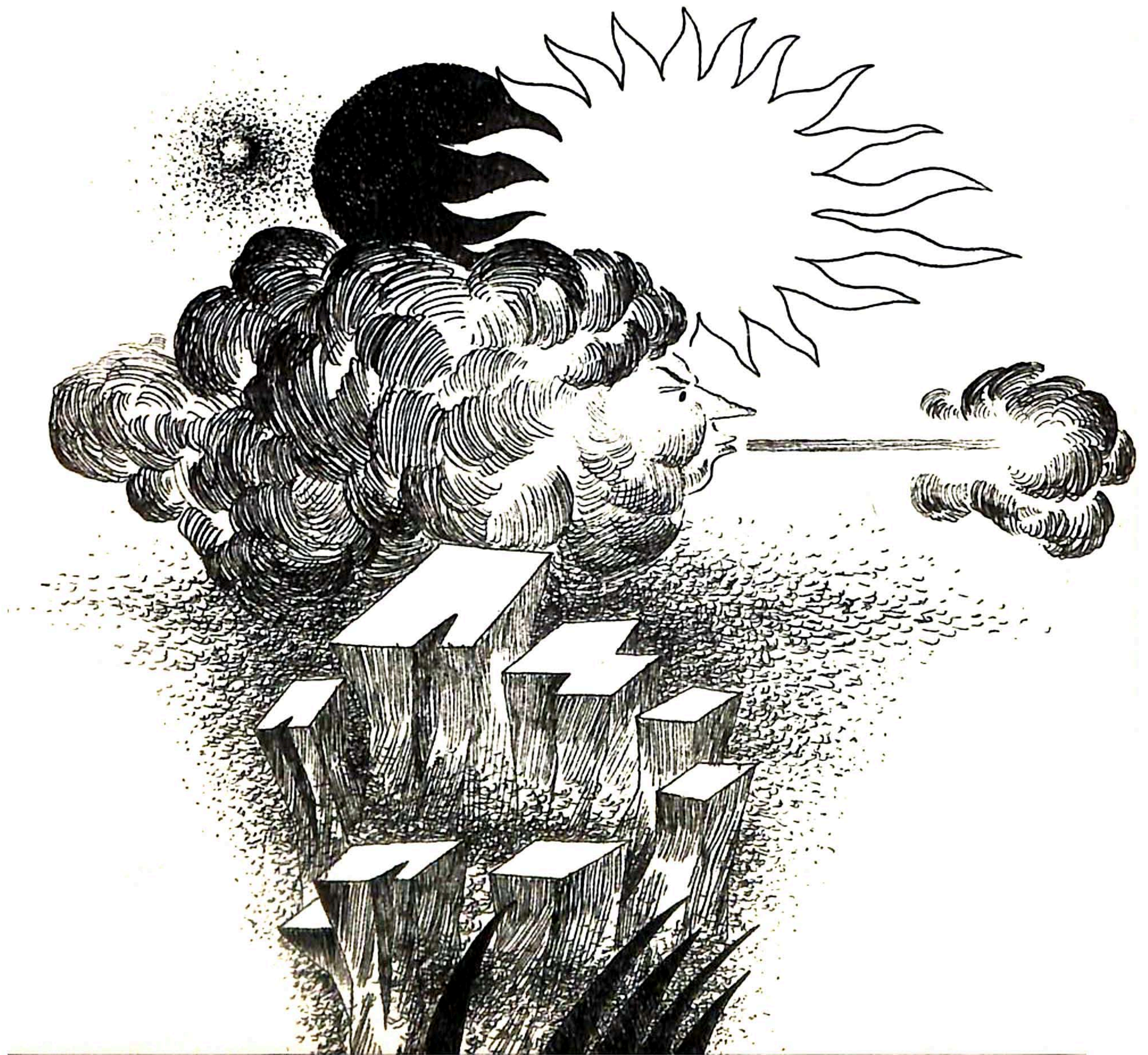


साथ कूच किया था तथा उसने और २० हज़ार पैदल, २ हज़ार घुड़सवार सिपाही और २० हाथी ले लिये। ऐसी है हिन्दुस्तान के मुस्लिम सुल्तान की शक्ति; इस्लाम धर्म भी अच्छा माना जाता है। जहां तक सच्चे धर्म का संबंध है, यह केवल ईश्वर को ही मालूम है और सच्चा धर्म एक ईश्वर में विश्वास करना तथा हर पवित्र स्थान में पवित्रतापूर्वक उसके नाम का स्मरण करना है।

पांचवें ईस्टर को मैंने रूस के लिए रवाना होने का निश्चय किया। मैंने बीदर से ख़ुदा के पैगम्बर, मुहम्मद के धर्म के अनुसार, आला बैराम के एक महीने पहले प्रस्थान किया। जहां तक महान ईसाई त्यौहार–ईसा के पुनर्जीवन–का संबंध है, मुझे नहीं मालूम कि इसे कब मनाना चाहिए और मैं मुस्लिमों के रोज़े के साथ उपवास रखता था और उनके रोज़े खोलने के साथ अपना उपवास तोड़ता था। मैंने बीदर से २० कोस दूर गुलबर्ग में उपवास रखा।

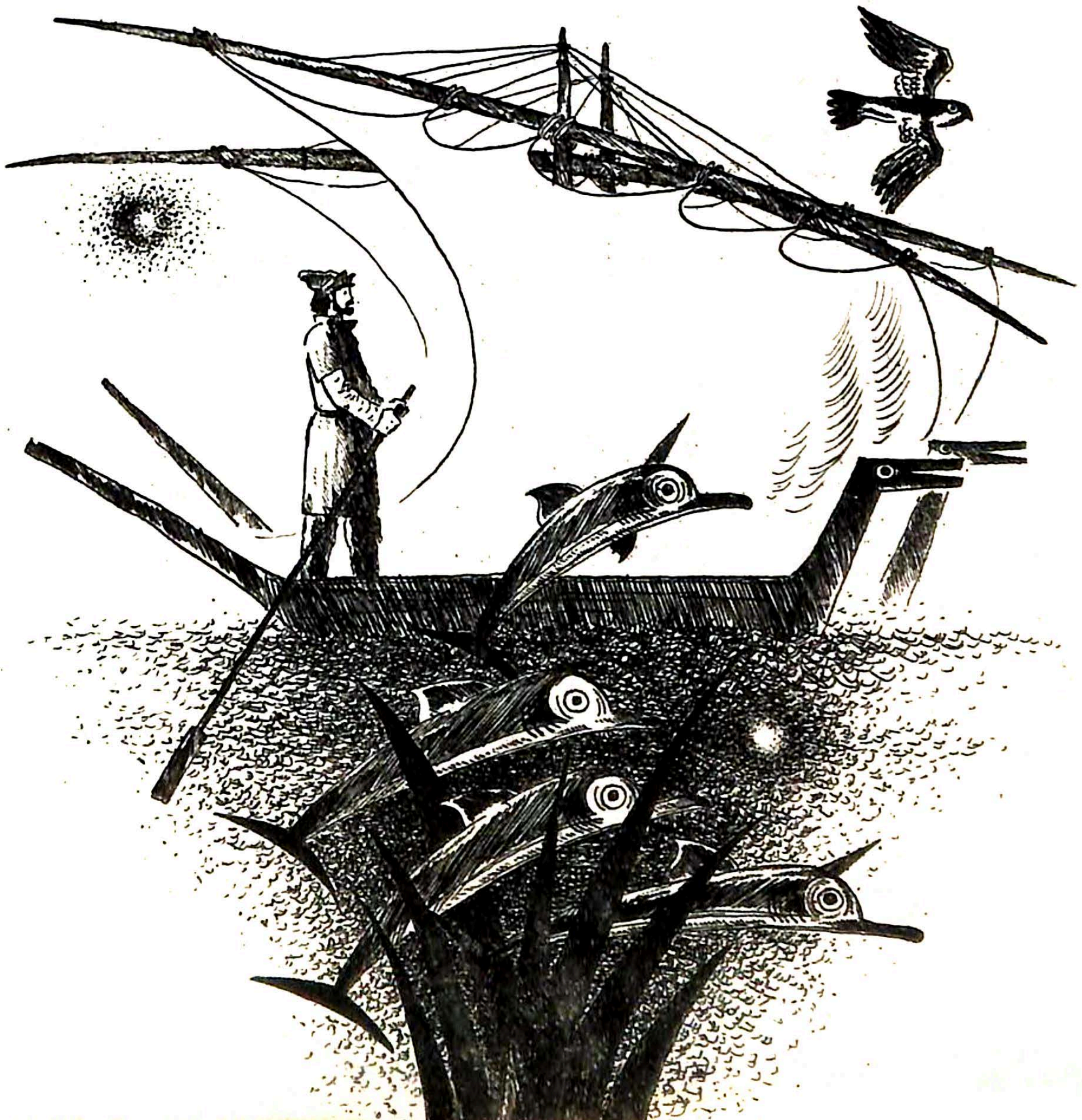


सुल्तान अपनी फ़ौज के साथ आला बैराम के बाद १५वें दिन मलिकुत्तुज्जार के पास आया और सभी गुलबर्ग में एकत्रित हुए। वे युद्ध में हार गये, उन्होंने एक हिन्दू नगर पर कब्ज़ा कर लिया, लेकिन उनके बहुत से लोग मारे गये और ख़ज़ाने से काफ़ी कुछ खर्च करना पड़ा। हिन्दू राजा बड़ा शक्तिशाली है, उसके पास एक विशाल फ़ौज है और वह विजयनगर के पर्वत पर निवास करता है। उसका नगर बहुत बड़ा है, यह तीन खाइयों से घिरा हुआ है, इसके बीच से होकर एक नदी बहती है; नगर की एक ओर जंगल है और दूसरी ओर एक अति सुंदर घाटी। वहां कहीं से भी नहीं पहुंचा जा सकता, क्योंकि सड़क नगर से होकर जाती है, न ही ऊंचे पर्वत, जंगलों और कंटीली झाड़ियों की वजह से नगर पर कहीं से कब्ज़ा किया जा सकता है। फ़ौज ने एक महीने तक नगर पर घेरा डाले रखा; कुछ लोग प्यास के मारे मर गये और बहुत से लोग भुखमरी तथा जलाभाव से मर गये और



हालांकि उन्हें पानी दिखायी दे रहा था, पर वे कहीं से भी वहां पहुंच नहीं सके। लेकिन ख़्वाजा मलिकुत्तुज्जार ने हिन्दू नगर पर अधिकार कर लिया और उसने यह शक्ति से, दिन-रात लड़ते हुए किया। उसकी फ़ौज २० दिन तक बिना खाये-पिये तोपों से नगर का घेरा डाले रही। उसके ५ हज़ार सर्वोत्तम सिपाही मारे गये। जब नगर पर कब्ज़ा हुआ, तो २० हज़ार स्त्री-पुरुषों को मार डाला गया और २० हज़ार लोगों और बच्चों को बंदी बना लिया गया। कुछ बंदियों को १० टंके, कुछ को ५ टंके और बच्चों को दो टंके की दर से बेच दिया गया। लेकिन कोई ख़ज़ाना हाथ नहीं लगा। वह बड़े नगर पर कब्ज़ा करने में भी असफल रहा।

गुलबर्ग से मैं कुलुर[79] गया, जहां कोर्नेलियन की खुदाई और तैयारी होती है और बाद में इसे दुनिया के विभिन्न भागों में भेजा जाता है। कुलुर में ३०० हीरा-कर्मी रहते हैं, वे हथियारों को सजाते हैं। कुलुर में मैं पांच महीने रहा और वहां



से गोलकुंडा[80] गया, जहां एक बहुत बड़ा बाज़ार है। गोलकुंडा से मैं गुलबर्ग, गुलबर्ग से शेख़ अलाउद्दीन, शेख़ अलाउद्दीन से कामेन्द्रिया, कामेन्द्रिया से कुनारिआस और कुनारिआस से सुरी और सुरी से हिन्द सागर के बड़े बंदरगाह धावुल पहुंचा।

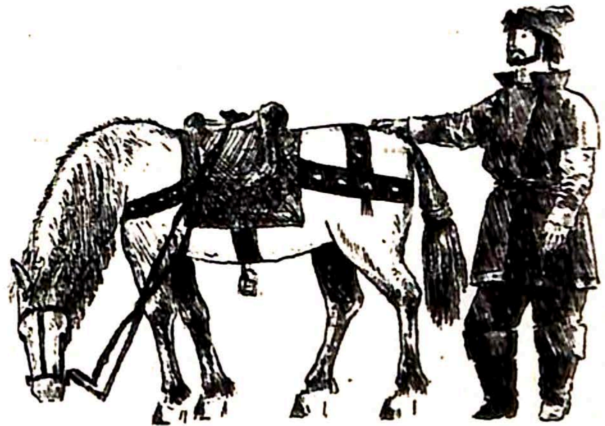
धावुल एक विशाल नगर है और भारत तथा इथियोपिया के तटवर्ती लोग वहां आते हैं। और मैं, अफ़नासी, सर्वशक्तिमान्, ईश्वर, स्वर्ग और पृथ्वी के स्रष्टा के एक अभिशप्त सेवक ने ईसाई धर्म, ईसा के बपतिस्मा, पवित्र पिताओं द्वारा प्रवर्तित उपवासों तथा धर्मादेशों के बारे में चिंतन-मनन किया और रूस जाने के लिए तरसता रहा। और डब्बे पर सवार होने तथा किराये के बारे में मोल-तोल करने के बाद मैंने होर्मुज़ पहुंचने के लिए किराये के रूप में सोने के दो सिक्के दिये।

मैं ईस्टर दिवस – मुस्लिम रोज़े – के तीन महीने पहले धावुल में जलपोत पर



बैठा। मैं डब्बे से समुद्र में एक महीना यात्रा करता रहा। समुद्र के अलावा कहीं कुछ नहीं दिखायी देता था और दूसरे महीने में जाकर ही मुझे इथियोपिया के पर्वत दिखायी दिये। फिर तो जलपोत पर सवार सभी लोग चिल्ला उठे: "हे ईश्वर, प्रतीत होता है कि हमारे भाग्य में यहीं नष्ट होना बदा है!"

मैंने इथियोपिया में पांच दिन बिताये। ईश्वर की कृपा से हमारा कोई अनिष्ट नहीं हुआ। हमने इथियोपियाइयों को काफ़ी मात्रा में चावल, काली मिर्च और रोटी दिये और उन्होंने जलपोत को लूटा नहीं। इसके बाद मुझे समुद्र से मस्काट जाने में १२ दिन लगे और वहां अपना छठा ईस्टर रखा। वहां से ६ दिन की समुद्री यात्रा के बाद मैं होर्मुज़ पहुंचा और वहां २० दिन रहा। मैं होर्मुज़ से लार गया और वहां तीन दिन रहा। मुझे लार से शिराज़[81] पहुंचने में १२ दिन लगे और वहां सात दिन ठहरा। शिराज़ से मैं अबेर्कुह[82] १५ दिन में पहुंचा और वहां दस



दिन रहा। मुझे अबेर्कुह से येज़्द पहुंचने में ६ दिन लगे और वहां आठ दिन बिताये। मैं येज़्द से इस्फ़ाहान[83] पांच दिन में पहुंचा और वहां छः दिन ठहरा। मैं इस्फ़ाहान से काशान गया और वहां पांच दिन बिताये। काशान से कुम[84], कुम से सावा[85], सावा से सुल्तानिया[86] और सुल्तानिया से ताब्रिज़[87] पहुंचा। ताब्रिज़ से मैं हसन बेग[88] के शिविर पर गया और वहां १० दिन रहा, क्योंकि आगे यात्रा जारी रखने में असमर्थ था। हसन बेग ने तुर्की सुल्तान के खिलाफ़ ४० हज़ार की फ़ौज भेजी थी और उसने सिवास पर कब्ज़ा कर लिया। तोकात[89] पर भी क़ब्ज़ा कर लिया गया और उसे जला दिया गया, अमास्या[90] को ले लिया गया और कई गांवों को लूट लिया गया। फ़ौज लड़ते हुए करामान[91] की ओर बढ़ी। हसन बेग के शिविर से मैं एर्जिन्जान[92] और एर्जिन्जान से त्रेबिज़ोन्द[93] पहुंचा।

मैं ईश्वर की पवित्र माता की परार्थ-प्रार्थना दिवस पर त्रेबिज़ोन्द पहुंचा और वहां पांच दिन रहा। वहां जलपोत पर सवार होकर मैंने किराये के बारे में तोल-मोल किया और काफ़ा[94] के लिए किराये के रूप में सोने का एक सिक्का दिया। मुझे काफ़ा में चुंगी के रूप में सोने का एक और सिक्का देना था। त्रेबिज़ोन्द में सुबासी[95] और पाशा ने मुझे काफ़ी नुक़्सान पहुंचाया; वे मेरा सभी सामान पर्वत स्थित अपने नगर में ले गये और एक-एक चीज़ को टटोलकर देखा चूंकि मैं हसन बेग के शिविर से आया था, इसलिए काग़ज़ों की तलाश करते समय उन्होंने सभी मूल्यवान वस्तुएं चुरा लीं।

ईश्वर की दया से मैं तीसरा सागर, काला सागर (फ़ारसी में स्तांबुल सागर) पहुंचा। समुद्र से उपयुक्त हवा के साथ वोनादा[96] पहुंचने में मुझे पांच दिन लगे, लेकिन वहां शक्तिशाली उत्तरी हवा ने हमें रोक दिया और त्रेबिज़ोन्द वापस लौटने के लिए विवश कर दिया। शक्तिशाली और प्रचंड हवा की वजह से हम प्लाताना[97] में लंगर डालकर १५ दिन पड़े रहे। प्लाताना से हम दो बार समुद्र में आगे बढ़े, लेकिन प्रचंड हवा ने हमें रोक दिया। हे ईश्वर, मैं समुद्र को पार करनेवाला ही था कि हवा हमें बालाक्लावा[98] और वहां से गुर्ज़ुफ़[99] खींच ले गयी।

ईश्वर की दया से मैं ईसा के पृथ्वी पर आगमन के उपवास के नौ दिन पहले काफ़ा पहुंच गया। हे ईश्वर, मेरे स्रष्टा! ईश्वर की दया से मैंने तीन समुद्रों को पार किया है। शेष केवल ईश्वर, रक्षक ईश्वर को ही मालूम है।

टिप्पणियां

[1] देर्बेंत सागर या ख़्वालिन सागर अर्थात् कास्पियन सागर।

[2] हिन्द सागर या हिन्दुस्तान सागर अर्थात् हिन्द महासागर।

[3] स्तांबुल सागर अर्थात् काला सागर।

[4] स्वर्ण-गुम्बददार उद्धारक गिरजा – त्वेर (अब कालीनिन) में एक बड़ा गिरजा। पत्थर का यह गिरजा, जिसका उल्लेख निकीतिन ने किया है, १२वीं सदी के अंत में बनाया गया था।

[5] मिख़ाईल बोरीसोविच – त्वेर का ग्रैंड ड्यूक (१४६१–१४८५)।

[6] गेन्नादी – त्वेर का बिशप।

[7] पवित्र ट्रिनिटी मठ – सर्वोच्च पादरी मकारियस द्वारा स्थापित काल्याज़िन नगर में एक मठ।

[8] यहां इशारा कीएव के ग्रैंड ड्यूक सेंट व्लादीमिर के पुत्रों बोरीस और ग्लेब के नाम पर रखे गये काल्याज़िन मठ के एक गिरजे की ओर है। रूसी गिरजे ने बोरीस और ग्लेब को संत घोषित किया।

[9] यहां निकीतिन का इशारा इवान तृतीय वसील्येविच की ओर है।

[10] वसीली पापिन को इवान तृतीय ने अज़रबैजान के एक उत्तर-पश्चिमी प्रदेश शिर्वान के शाह फ़र्रुख़ यासर के दरबार में राजदूत के रूप में भेजा था।

[11] सराई – स्वर्णिम होर्दे की राजधानी।

[12] बेरेकेज़ान – आस्त्राख़ान के उत्तर में वोल्गा के मुहाने में अवस्थित एक बस्ती।

[13] बुज़ान – निचली वोल्गा की एक सहायक नदी, जो आखतूबा में गिरती है।

[14] ख़ान कासिम – आस्त्राख़ान का पहला ख़ान (१४६६ से)।

[15] वोल्गा के मुहाने में एक उथला स्थान।

[16] देर्बेंत – छठी शताब्दी से विदित कास्पियन सागर के पश्चिमी तट पर एक नगर।

[17] तार्की या तार्खु – कास्पियन सागर के तट पर दागेस्तान का एक दुर्ग।

[18] काइताक – पश्चिमी दागेस्तान में, देर्बेंत के उत्तर-पश्चिम में काइताक नाम के एक प्रदेश और रियासत में रहते थे।

[19] शेमाख़ा – शिर्वान में एक नगर, अब अज़रबैजान सोवियत जनतंत्र का एक ज़िला केन्द्र।

[20] चापाकुर – कास्पियन सागर के दक्षिणी तट पर माज़ान्देरान में एक गांव।

[21] सारी – कास्पियन सागर के १५ मील दक्षिण में स्थित एक नगर। यह कास्पियन सागर के दक्षिणी तट और एलबुर्ज़ पर्वत के बीच एक पतले भूक्षेत्र माज़ान्देरान के उत्तर ईरानी प्रदेश में अवस्थित है।

[22] आमूल – माज़ान्देरान का एक सबसे बड़ा नगर।

[23] देमावेन्द – एलबुर्ज़ पर्वत की सबसे ऊंची चोटी (१८,३८१ फ़ुट)।

[24] रेई – मध्यकालीन ईरान का एक बड़ा नगर। इसके ध्वंसावशेष तेहरान से पांच मील दक्षिण-पूर्व में अवस्थित हैं।

[25] काशान, नाईन, सिर्जान और तारूम ईरानी नगर हैं।

[26] बात्मान – एक बाट का नाम।

[27] लार – दक्षिणी ईरान में एक नगर। निकीतिन ने इसकी दो बार यात्रा की।

[28] बंदर (बंदरगाह) – निकीतिन का आशय पुराने होर्मुज़ से है (अगली टिप्पणी देखिये)।

[29] होर्मुज़ – फ़ारस की खाड़ी में एक द्वीप और पुराना समुद्री बंदरगाह है। पुराना होर्मुज़ तट पर बसा था।

[30] डब्बा – उस समय के समुद्रगामी जलपोत का नाम।

[31] मस्काट – अरब के ओमान तट पर समुद्री बंदरगाह।

[32] यहां यह साफ़ नहीं है कि निकीतिन किस स्थान को "देगा" कहता है। शायद उसका मतलब पश्चिमी भारत में काठियावाड़ के निकट एक बंदरगाह दिव (द्वीप) से है।

[33] खम्भात – खम्भात की खाड़ी में एक बंदरगाह।

[34] चौल -- बम्बई के दक्षिण में मालाबार तट पर एक बंदरगाह।

[35] पाली – चौल के पूर्व में एक नगर।

[36] जुन्नार – बम्बई के पूर्व में एक नगर।

[37] असद खान – संभवतः मुहम्मद शाह तृतीय के अधीन जुन्नार का सूबेदार। १४वीं सदी के मध्य में दक्खिन में बहमनी राजवंश द्वारा शासित मुस्लिम राज्य की स्थापना हुई। जिस समय निकीतिन भारत में था, मुहम्मद शाह तृतीय बहमनी की गद्दी पर था। लेकिन वास्तव में शाह का वज़ीर मुहम्मद गवां ही उसकी ओर से शासन चलाता था, जिसने आगे चलकर मलिकुत्तुज्जार का खिताब धारण किया। निकीतिन ने वज़ीर के वास्तविक नाम की जगह इसी नाम का प्रयोग किया है।

[38] काफ़िर – मुस्लिम विजेताओं ने "काफ़िर" शब्द का प्रयोग ग़ैर-मुस्लिमों के लिए किया। निकीतिन ने इसका प्रयोग हिन्दुओं के लिए किया है।

[39] खुरासान – उत्तर-पश्चिम ईरान का एक प्रदेश। मध्य युग में यह पश्चिम में देश्त-ए-कविर रेगिस्तान से पूर्व में आमू दरिया और बाद्ख़्शान पर्वत तक तथा उत्तर में काराकुम रेगिस्तान से दक्षिण में हिन्दुकुश पर्वत तथा सीस्तान प्रदेश तक फैला हुआ था।

[40] चग़ताई – १३वीं से १५वीं शताब्दी तक मध्य एशिया का नाम।

[41] तन्ना – एक पौधा जिससे हिन्दुस्तान में मादक पेय बनाया जाता था।

[42] बीदर – हैदराबाद के ६२ मील उत्तर-पश्चिम में दक्खिन पठार में एक नगर।

[43] कुलुनगीर और गुलबर्ग दक्खिन के नगर हैं।

[44] एल्लंदु – गुलबर्ग के २८ मील उत्तर-पूर्व में एक नगर।

[45] ईश्वर की पवित्र माता की परार्थ-प्रार्थना का त्यौहार, पहली अक्तूबर।

[46] वस्तुतः बीदर बहमनी राज्य की राजधानी था न कि संपूर्ण मुस्लिम भारत की।

[47] मलिक खान और फ़रहाद खान बहमनी शासक मुहम्मद शाह तृतीय के सेनापति थे।

[48] प्राच्य चर्च में ईसा के पृथ्वी पर आगमन का उपवास १४ नवम्बर से २४ दिसम्बर तक रखा जाता है।

[49] ख्वाजा युसूफ खुरासानी – निकीतिन ने ऐसा मुस्लिम नाम स्वीकार किया।

[50] संभवतः निकीतिन का आशय हिन्दू धर्म के अनेकानेक सम्प्रदायों और पंथों से है।

[51] पर्वत – हैदराबाद के १०८ मील दक्षिण-पूर्व में कृष्णा नदी के दायें तट पर मंदिरों का समूह।

[52] शशकनी – चांदी का छोटा सिक्का।

[53] यहां तुलना बीज़ांतिनी सम्राट जुस्टिनियन की अश्वारोही मूर्त्ति से की गयी है।

[54] आला बैराम – दो बड़े मुस्लिम त्यौहारों में से एक।

[55] धाबुल – १५वीं सदी में बम्बई से ८५ मील दक्षिण में मालाबार तट पर एक महत्त्वपूर्ण बंदरगाह था।

[56] १३वीं और १४वीं शताब्दियों में कालीकट मालाबार तट पर एक सुप्रसिद्ध बंदरगाह था।

[57] यहां स्पष्ट नहीं है कि "शाबात" से निकीतिन का आशय किस देश से है।

[58] पेगु – दक्षिणी बर्मा में निचली इरावदी का एक प्रदेश।

[59] चीन और माचीन – मध्य युग में मुस्लिम लोग इन नामों का प्रयोग चीन के लिए करते थे। निकीतिन ने इनका इस्तेमाल दक्षिण चीन के लिए किया है।

[60] "किताय" से निकीतिन का मतलब उत्तर चीन से है।

[61] अलाचा – फ़ारस का कपड़ा, जो दुरंगा होता है।

[62] "ऊंचा पर्वत", श्रीलंका में आदम की चोटी, जिस पर मानव के विशाल पदचिन्ह के आकार का एक गर्त्त है। एक किंवदंती के अनुसार यह पदचिन्ह आदम का है।

[63] टंका – चांदी का सिक्का, जिसका वज़न और मूल्य विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग थे।

[64] रायचूर – हैदराबाद के दक्षिण-पश्चिम में एक नगर।

[65] पोच्का – मूल्यवान पत्थरों के लिए एक पुराना रूसी बाट, जो १० कैरट के बराबर था।

[66] कनी – एक छोटा सिक्का, जो एक टंके के १/६४ के बराबर था।

[67] यहां स्पष्ट नहीं है कि "काइन" से निकीतिन का मतलब किस नगर से है।

[68] सगदक – घुड़सवार सिपाही की पूर्ण साजसज्जा।

[69] बहरीन – फ़ारस की खाड़ी में एक द्वीप-समूह।

[70] जिद्दा – लाल सागर के तट पर अरब का एक बंदरगाह।

[71] गिलान – उत्तर-पश्चिम ईरान में एक प्रदेश।

[72] होम्स – प्राचीन एमेसा, सीरिया में एक नगर।

[73] अलेप्पो – सीरिया में एक नगर।

[74] सिवास – (यूनानी "सेबास्ते"), एशिया माइनर के पूर्वी भाग में किज़िल इर्माक नदी के तट पर एक नगर।

[75] वलाकिया – रूमानिया का प्राचीन नाम।

[76] पोदोलिया – ऊपरी द्नेस्तर का एक रूसी प्रदेश।

[77] विजयनगर – दक्षिण भारत में एक बड़ा नगर, कभी विशाल सामंती राज्य की राजधानी था।

[78] ऑटोनोमोस – (यूनानी "तानाशाह"), इसका आशय विजयनगर के राजा से है।

[79] कुलुर – हैदराबाद के दक्षिण-पश्चिम में रायचूर क्षेत्र में हीरे की खानें।

[80] गोलकुंडा – गुलबर्ग के दक्षिण-पूर्व में एक नगर।

[81] शिराज़ – दक्षिण ईरान के फ़र्स प्रदेश का एक मुख्य नगर।

[82] अबेर्कुह – येज़्द के दक्षिण-पश्चिम में उत्तरी फ़र्स का एक नगर।

[83] इस्फ़ाहान – मध्य ईरान का एक नगर।

[84] कुम – तेहरान के दक्षिण में एक ईरानी नगर।

[85] सावा – कुम के उत्तर-पश्चिम में एक नगर।

[86] सुल्तानिया – उत्तरी ईरान में ताब्रिज़ की राजधानी से जोड़नेवाले मार्ग पर एक नगर।

[87] ताब्रिज़ – ईरानी अज़रबैजान में एक नगर।

[88] हसन बेग तुर्कमान अक कोउन्लु ("सफ़ेद भेड़ा") कबीलों के संघ का सरदार था।

[89] तोकात – एशिया माइनर में, सिवास के उत्तर में एक नगर।

[90] अमास्या – सिवास के उत्तर-पश्चिम में येसिल इर्माक नदी के तट पर एक नगर (देखिये टिप्पणी नं० ७४)।

[91] करामान – एशिया माइनर के दक्षिण-पूर्वी भाग में एक तुर्कमान राज्य।

[92] एर्जिन्जान – सिवास के पूर्व में आर्मेनिया की पठार में एक नगर।

[93] त्रेबिज़ोन्द – काले सागर के दक्षिणी तट पर एक नगर।

[94] काफ़ा – आजकल फ़ेओदोसिया, क्रीमिया के दक्षिणी तट पर एक समुद्री बंदरगाह।

[95] सुवासी – ओटोमन तुर्की में एक सामंत और सेनापति।

[96] वोनादा – त्रेबिज़ोन्द के पश्चिम में काले सागर के दक्षिणी तट पर एक अंतरीप।

[97] प्लाताना – काले सागर के दक्षिणी तट पर एक छोटा नगर और बंदरगाह।

[98] बालाक्लावा – क्रीमिया के दक्षिण-पश्चिम तट पर एक बंदरगाह।

[99] गुर्जुफ़ – क्रीमिया के दक्षिण तट पर एक बस्ती (अब एक स्वास्थ्य-केन्द्र)।

उपसंहार

लंबी दूरी और दुनिया के सर्वोच्च पर्वतीय शिखर सोवियत संघ और भारत को पृथक करते हैं। लेकिन प्राचीन काल से ही दोनों महान देशों के लोग एक-दूसरे के प्रति तीव्र दिलचस्पी प्रदर्शित करते हुए मैत्रीपूर्वक रहते आये हैं। सदियों के दौरान प्रायः रूसी यात्रियों, वैज्ञानिकों, लेखकों और कलाकारों ने दूर-स्थित इस दक्षिणी देश की यात्रा की है, जिसके चरणों को हिन्द महासागर का उष्ण जल धोता है। और हम उनकी डायरियों और संस्मरणों में भारत और उसके लोगों के प्रति सहानुभूति से भरी हार्दिक अभिव्यक्तियां पाते हैं।

अफ़नासी निकीतिन भारत की यात्रा करनेवाला पहला रूसी था।

यह सुप्रसिद्ध यात्री वोल्गा, त्वेर्त्सा और त्माका नदियों के संगम पर अवस्थित प्राचीन रूसी नगर त्वेर (अब कालीनिन) में पैदा हुआ था। १३वीं शताब्दी के प्रारंभिक काल के इतिहास में इस नगर का पहला उल्लेख मिलता है। १५वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में यह नगर त्वेर की प्रभुसत्तासंपन्न रियासत की राजधानी था। यह उन अनेक स्वतंत्र रियासतों में से एक थी, जिनमें रूस उन दिनों विभाजित था।

आबादी या समृद्धि में कुछ रूसी नगर ही इसकी बराबरी कर सकते थे। न ही तब इसने एक प्रमुख व्यापारिक केन्द्र के रूप में अपना महत्त्व खोया, जब १५वीं सदी के अंत में यह केन्द्रीयकृत रूसी राज्य का एक अंग बन गया।

त्वेर की बाह्य आकृति में ऐसा कुछ बहुत कम था, जिससे कि इसे अन्य रूसी नगरों से अलग किया जा सके। इसके केन्द्रीय भाग में एक दुर्ग था, जहां स्वर्ण-गुम्बददार उद्धारक बड़ा गिरजा, राजा का महल, उसके नौकर-चाकरों के घर और अन्य भवन खड़े थे। दुर्ग के बाहर दस्तकार और दूसरे नगरवासी रहते थे। यहां एक बाज़ार भी था, जहां व्यापारी अपनी वस्तुएं बिक्री के लिए लाते थे।

त्वेर के अधिक उद्यमी व्यापारी विदेश व्यापार में लगे हुए थे। १५वीं सदी में रूसी व्यापारी पश्चिम यूरोप, मध्य पूर्व और मध्य एशिया के बाज़ारों में आया-जाया करते थे। प्रतीत होता है कि अफ़नासी निकीतिन ने भी दूर-दूर की यात्राएं की थीं, क्योंकि अपने यात्रा-विवरणों में उसने रूस से लेकर क्रीमिया, जार्जिया, तुर्की, वलाकिया और पोदोलिया तक का विशद वर्णन किया है, वह उन प्रदेशों से भली-भांति परिचित व्यक्ति मालूम होता है।

एक दिन शिर्वान रियासत के शासक का राजदूत हसन बेग मास्को के ग्रैंड ड्यूक इवान तृतीय के दरबार में पहुंचा। वह अपने साथ मूल्यवान उपहार-वस्तुएं लाया था। इवान तृतीय ने त्वेर के वसीली पापिन को अपने राजदूत के रूप में शिर्वान के दरबार में भेजा। यह ख़बर सुनते ही निकीतिन तथा कुछ दूसरे सौदागर व्यापार करने के उद्देश्य से शिर्वान के लिए रवाना हो गये। वे वोल्गा से दो जलपोतों में नीचे की ओर चले। और इस तरह वह महान यात्रा शुरू हुई, जिसका निकीतिन द्वारा वर्णन हमें धरोहर के रूप में प्राप्त हुआ है और जिसे इस पुस्तक में प्रकाशित किया गया है।

अनेक बार ख़तरा मोल लेने के बाद निकीतिन ने अपने को बाकू में पाया। वहां से वह पूर्व के एक सबसे बड़े व्यापारिक केन्द्र और समुद्री बंदरगाह होर्मुज़ पहुंचने के लिए संपूर्ण फ़ारस को पार करने के लिए रवाना हुआ। फ़ारस की यात्रा का वर्णन अत्यंत संक्षिप्त है –

निकीतिन ने अपने को केवल उन स्थानों की न्यूनाधिक सूची देने तक ही सीमित रखा है, जिनकी उसने अपने रास्ते में यों ही यात्रा की थी। होर्मुज़ से आगे की यात्रा का उसका वर्णन अधिक विस्तृत और सजीव है।

फ़ारस में ही निकीतिन ने सुना कि हिन्दुस्तान में घोड़े नहीं पाले जाते और इसलिए वे उस देश में बड़े कीमती हैं। इस चीज़ ने उसे भारत की यात्रा करने के लिए प्रेरित किया। उसने एक घोड़ा ख़रीदा और एक डब्बे (• छोटे जलपोत) में रवाना हो गया। वह हिन्दुस्तान के तट की ओर इस आशा के साथ बढ़ा था कि वह वहां घोड़े को बेच देगा और मिली रक़म से वे वस्तुएं खरीद कर लायेगा, जिनकी रूस में ज़रूरत थी।

एक बड़ा साहसी आदमी ही इतने कमज़ोर जलपोत में तूफ़ानी हिन्द महासागर की यात्रा करने की हिम्मत कर सकता था। छः हफ़्ते बाद निकीतिन को लिये डब्बा भारत के मालाबार तट पर चौल बंदरगाह पहुंचा। "और यहीं भारत देश है," निकीतिन ने अपनी डायरी में लिखा।

निकीतिन ने भारत में आंखों देखा हाल का जो वर्णन किया है, वह इस बात का ज्वलंत प्रमाण है कि वह तीव्र अवलोकन की प्रतिभा तथा बिल्कुल अपरिचित लोगों की जीवन-पद्धति के विशिष्ट पहलुओं को समझने की योग्यता से संपन्न था। उसने न केवल तथ्यों का सही-सही वर्णन किया, बल्कि दिलचस्प उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उनका विश्लेषण भी किया।

अपने भारत-भ्रमण के दौरान निकीतिन ने महान देश के अनेकानेक नगरों और गांवों को देखा। उसने पश्चिमी तट पर समुद्री बंदरगाहों की यात्रा की, घाटों को पार किया और दक्खिन पठार के केन्द्र में पहुंचा। उसके यात्रा-विवरण से हमें जुन्नार, गुलबर्ग, बीदर और गोलकुंडा, एल्लंदु में बाज़ारों, रायचूर में हीरे की खानों, पर्वत के मंदिरों तथा विजयनगर दुर्ग के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। वह ऐसे स्थानों – उदाहरणार्थ, श्रीलंका, पेगु, आदि के बारे में सूचना प्रस्तुत करता है, जिनकी उसने यात्रा नहीं की, लेकिन जिनके बारे में उसने दूसरों से जानकारी प्राप्त की थी।

भारतीय जीवन के किसी भी पहलू, किसी भी उल्लेखनीय चीज़ को निकीतिन ने अपनी आंखों से ओझल नहीं होने दिया। उसके यात्रा-विवरण में भारतीयों की शारीरिक बनावट, उनकी वेशभूषा, खान-पान के तौर-तरीकों, जीवन-स्तर, धार्मिक अनुष्ठानों, प्रथाओं, जाति-भेदों और परस्पर-संबंधों का विस्तृत उल्लेख है। उसकी निष्पक्ष लेखनी ने रोचक टिप्पणियों के साथ सभी चीज़ों को दर्ज किया। वह सुल्तान के शानदार जुलूस, उसकी अपार धन-दौलत और चकाचौंधपूर्ण शान-शौकत का विस्तृत वर्णन करता है। वह उस काल का एकमात्र ऐसा यात्री था, जिसने सुल्तान और उसके दरबारियों की दौलतमंदी तथा ऐशोआराम भरे जीवन के कुत्सित पहलू को देखा। "किसान बहुत गरीब हैं, लेकिन जागीरदार बहुत अमीर हैं और ऐशोआराम में रहते हैं," निकीतिन अपने यात्रा-विवरण में लिखता है। केवल यही चीज़ उसे १५वीं सदी के भारत का वर्णन करनेवाले अन्य अनेक लेखकों में अग्रणी स्थान प्रदान कर देती है।

निकीतिन भारत में लगभग तीन साल रहा था। लेकिन उसके देश-प्रेम ने उसे रूस, अपने लोगों के पास वापस लौटने के लिए प्रेरित किया। "ईश्वर रूमी देश की रक्षा करे! दुनिया में ऐसा कोई देश नहीं है, हालांकि रूस में जागीरदार अन्यायपूर्ण हैं। हे ईश्वर, रूस

देश में सुव्यवस्था और न्याय कायम हो!" ये पंक्तियां निकीतिन के गहन देश-प्रेम को व्यक्त करती हैं और उसे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में प्रकट करती हैं, जिसके विचार अपने ज़माने की दृष्टि से अत्यधिक प्रगतिशील थे।

निकीतिन को मालाबार तट पर धाबुल बंदरगाह तक पहुंचने में कई महीने लगे, जहां से वह अपने देश के लिए रवाना हुआ। वह मस्काट, होर्मुज़, फ़ारस, एशिया माइनर और क्रीमिया के काफ़ा बंदरगाह (आजकल फ़ेओदोसिया) से, जहां एक रूसी सराय थी, होते हुए स्वदेश लौटा। लेकिन वह अपने ज़न्म-नगर त्वेर नहीं पहुंच पाया; इतिहासकारों के अनुसार स्मोलेन्स्क पहुंचने के पूर्व उसकी मृत्यु हो गयी।

अफ़नासी निकीतिन की "तीन समुद्र पार यात्रा" ऐसे ही समाप्त हुई। लगभग ५०० साल पहले लिखा उसका यात्रा-विवरण आज भी वैसे ही रोचक और उत्तेजक है। इसमें लेखक ने जिस स्पष्टता और ईमानदारी से टीका-टिप्पणियां की हैं, वे प्रेरणाप्रद हैं। साथ ही, भारतीयों की जीवन-पद्धति के बारे में दिये गये प्रचुर ज्ञानप्रद तथ्य हमारा मन मोह लेते हैं। वे रूसी-भारतीय दोस्ती के स्रोत दिखाते हैं तथा उस दोस्ती की गहराई के प्रमाण हैं।

अनुवादक – ददन उपाध्याय

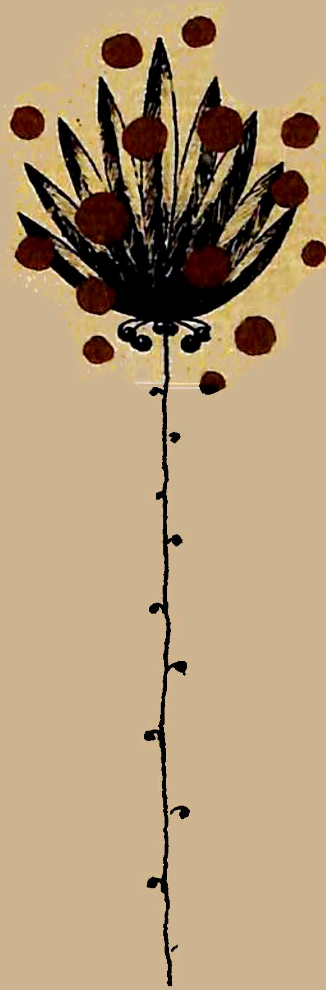
ХОЖДЕНИЕ ЗА ТРИ МОРЯ
АФАНАСИЯ НИКИТИНА
на языке хинди

AFANASY NIKITIN.
VOYAGE BEYOND THREE SEAS.
in Hindi

सोवियत संघ में मुद्रित

ISBN 5-05-000393-8





ISBN 5-05-000393-8